

EXPANDED MUSEUM EDITION / 2026

# फ़साना-ए-आज़ाद

## लखनऊ से रूम, फिर लखनऊ

मूल उर्दू रचना । पंडित रतननाथ धर ‘सरशार’

---

मूल उर्दू कृति के प्रकाशक — मुंशी नवल किशोर प्रेस, लखनऊ।

संपादकीय / विस्तृत संग्रहालय संस्करण

# किस्सा कहाँ से पकड़ें?

लखनऊ के चौक में किसी ने चंदन के रंग पर भी पहरा बिठा रखा है। कहते हैं कि वही रंग पहनकर दूसरा आदमी निकला तो ख़ैर नहीं। अब मियाँ आज़ाद को यह बात बताने की देर थी। अगले दिन उनके जूते तक संदली थे।

हुस्नआरा को ऐसा ही आदमी पसंद आता है। अम्माँ पूछ बैठें कि उसके बाप-दादा कौन हैं, तो वह क्या जवाब देंगी? खोजी की फ़िक्र दूसरी है। कल का आया यह जवान कहीं नवाब की सवारी लेकर ग़ायब न हो जाए! तीनों को अभी ख़बर नहीं कि एक-दूसरे की ख़ातिर वे कितनी दूर तक जाएँगे।

सीधे कहानी पढ़नी हो तो अगले पन्ने से पहला खंड खोलिए। पहले उस अख़बार के दफ़्तर में जाना चाहें, जहाँ यह किस्सा बना, तो सरशार और उनके पाठकों से मिलिए। अंत में दस प्रसंग अपने चित्रों और पूरी तफ़सील के साथ हैं। मकतब के उस्ताद का इम्तिहान किसने लिया और बम्बई के बंदरगाह पर खोजी किसे पुकार रहे थे, यह वहीं पढ़िए।

यह सरशार की उर्दू कृति का समकालीन हिंदी संग्रहालय रूपांतर है। कथा-प्रसंग दिए गए हिंदी पाठ से लिए गए हैं। साथ की पंक्ति-संख्याएँ उसी फ़ाइल की हैं। पात्रों के चित्र इस संस्करण के लिए कल्पित हैं। ऐतिहासिक विवरण के संदर्भ पुस्तक के अंत में मिलेंगे।

पढ़ने की राह

# अपने पन्ने चुनिए

## सरशार और उनका ज़माना ४

लेखक, नवल किशोर प्रेस और अख़बार के पहले पाठक

## आठ किरदार ८

चित्र, परिचय और कथा में उनके रिश्ते

## एक नाम, दो दोस्त १२

लखनऊ

## घर से दूर १९

रूम और लखनऊ

## जिसके लिए गए थे २६

वतन वापसी

## दस चित्रकथाएँ ३४

चित्रों से आगे, हर किस्से का विस्तृत अंजाम

## संदर्भ और संग्रह ६५

इतिहास के स्रोत और पढ़ने के लिंक

लेखक / पंडित रतननाथ धर ‘सरशार’

# सरशार के कान में बसा लखनऊ

## लगभग १८४६–१९०३

मियाँ खोजी को दो वाक्य बोलने दीजिए। किसी को उनका नाम बताने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। बात अपनी बहादुरी की हो या अपने टट्टू की, एक ही अकड़ उनकी आवाज़ में चली आती है। ऐसी पहचान रचने वाले पंडित रतननाथ धर लखनऊ के एक कश्मीरी पंडित परिवार में पले। ‘सरशार’ उनका साहित्यिक नाम था।

उनके लेखन की पहली मंज़िल अख़बार का संपादकीय कमरा नहीं, लखीमपुर खीरी का एक स्कूल था, जहाँ वे पढ़ाते थे। उन्होंने फ़ारसी में मुरासला-ए-कश्मीर के लिए लिखा, फिर अख़बारों और व्यंग्य-पत्र अवध पंच में भी लिखा। बोलने वाले की अपनी लय पकड़ना उनके बड़े काम आया। फ़साने के मकतब में लड़कों का शोर, उस्ताद की झिड़की और आज़ाद का सवाल एक ही कमरे में सुनाई देते हैं।

इस एक फ़साने से उनका लेखन ख़त्म नहीं हुआ। उन्होंने सैर-ए-कोहसार लिखा और सर्वान्तेस के डॉन किहोते का उर्दू रूप ख़ुदाई फ़ौजदार तैयार किया। १८९५ के बाद हैदराबाद में महाराजा किशन प्रसाद की उर्दू रचनाओं के संशोधन का काम किया और दबदबा-ए-आसिफ़ी पत्रिका निकाली। अध्यापक, अख़बारनवीस, अनुवादक और उपन्यासकार एक ही आदमी की ज़िंदगी के पड़ाव थे।

सरशार का ऐतिहासिक चित्र देखें

लेखक और प्रकाशक / अवध अख़बार

# जब संपादक ने किस्सा लिखना शुरू किया

१८७८–१८८३

लखनऊ में मुंशी नवल किशोर ने १८५८ में अपना छापाख़ाना स्थापित किया था। बीस वर्ष बाद उन्हें अपने उर्दू अख़बार अवध अख़बार के लिए नया संपादक चाहिए था। उन्होंने सरशार को नियुक्त किया। सरशार समाचार और संपादकीय लिखते थे। उन्होंने ज़राफ़त नाम से हँसी और चुटकी का एक स्तंभ भी शुरू किया। यहीं शहर में घूमते आज़ाद की आवाज़ पाठकों तक पहुँची।

२३ अगस्त १८७८ के अंक में वह टुकड़ा पढ़ने को मिलता है जिससे बाद के पुस्तक-संस्करण आरंभ होते हैं। अख़बार में वह उस दिन की दूसरी सामग्री के बीच छपा था। पुस्तक में वही टुकड़ा एक ऐसी कहानी का दरवाज़ा है जो चार जिल्दों तक चलती है। धारावाहिक विभिन्न रूपों में १८७८ से १८८३ तक निकला। पहली पुस्तक-माला १८८१ से १८८३ के बीच आई। अख़बार और पुस्तक का पाठ भी पूरी तरह एक-सा नहीं रहा।

लेखक और प्रकाशक का साथ फ़साने से आगे गया। सरशार ने अख़बार का संपादन छोड़ दिया, फिर भी १८८० से १८९३ के बीच नवल किशोर प्रेस ने उनके तीन और प्रमुख उपन्यास प्रकाशित किए। यही इस साझेदारी की ख़ास बात थी। जिस लेखक को अपने स्तंभ में अगले अंक जितनी जगह मिलती थी, उसी के लिए प्रेस ने कई जिल्दों की जगह भी बनाई।

पहली उर्दू जिल्द के प्रकाशन का अभिलेख देखें

ऐतिहासिक संदर्भ १, २, ४, ५ / संदर्भ-सूची अंत में

उस समय का लखनऊ / अदब, रेल और जंग

# शहर की ख़बर, दुनिया की ख़बर

## १८५६ से आगे

१८५६ में अंग्रेज़ों ने अवध का अपने राज में विलय किया। १८५७–५८ की लड़ाई भी लखनऊ देख चुका था। बीस बरस बाद सियासत के साथ बहुत कुछ बदल गया था, फिर भी मुशायरे होते थे, दास्तानें सुनाई जाती थीं और किसी की पोशाक या अदब से उसकी हैसियत का अंदाज़ लगाया जाता था। इसीलिए चौक में एक संदली जोड़े पर छिड़ा झगड़ा पुराने पाठक को फ़ौरन समझ में आ सकता था। बात कपड़े की जितनी थी, उतनी ही उस आदमी की धाक की थी जिसने उस रंग पर अपना हक़ जता रखा था।

किस्से में रेल के डिब्बे में बैठा आदमी हुक्का पेश करता है। बाद में मीडा बिजली के तार से संदेश जाने की मिसाल देती हैं। पुरानी आदतें और नए औज़ार एक साथ मौजूद हैं। किस चीज़ को तमीज़ कहा जाए, किस बात को अंधविश्वास, और पढ़ी-लिखी लड़की अपना पति कैसे चुने? इन सवालों पर कथाकार ने अलग-अलग लोगों को अलग जवाब देने दिए।

रूम का मतलब यहाँ उस्मानी सल्तनत है। रूस और उस्मानी साम्राज्य की १८७७–७८ की जंग पहली किस्तों के समय हाल की ख़बर थी। हुस्नआरा जब आज़ाद को रूम की ओर से लड़ने को कहती हैं, तब घर में शादी की बात करते-करते कहानी अख़बार के अंतरराष्ट्रीय समाचार तक जा पहुँचती है।

ऐतिहासिक संदर्भ १, २, ६, ७ / संदर्भ-सूची अंत में

पहले पाठकों की आवाज़ें / अख़बार में छपी चिट्ठियाँ

# पाठक ने पूछा, ख़र्च कहाँ से आया?

१८७९

३० अगस्त को धौलपुर के एस. बरसर की चिट्ठी छपी। उन्हें फ़साना पसंद था, मगर एक हिसाब समझ में नहीं आया। आज़ाद तुर्की निकल पड़े, तो सफ़र का ख़र्च किस घर से मिला? सरशार ने पहले दूसरे उपन्यासों की मिसाल दी। फिर ख़ुद ही हँसी की राह पकड़ी। चोर और जेबकतरे कम थे क्या, जो रकम का पता भी अख़बार में छाप देते! यह बहस रवाना होते वक़्त के पैसों पर थी। फ़ौजी सामान के लिए मीडा का चेक कहानी में बाद में आता है।

२५ सितंबर को अमरावती के हैदर अली का पत्र छपा। उनकी अपनी बोली दकनी थी। उन्होंने बताया कि अवध अख़बार हाथ लगते ही वे मियाँ आज़ाद का क़िस्सा खोलते थे। उन्हें गढ़ी हुई कथा के लोग और हालात सच्चे मालूम पड़ते थे। वे चाहते थे कि इसकी किताब बने, ताकि अख़बार का अंक गुज़र जाने पर कहानी हाथ से न निकल जाए।

एक पाठिका को हुस्नआरा की पढ़ाई और सोच का मेल खटका। उसने पूछा कि फ़ारसी पढ़ी इस युवती तक ऐसे विचार किस रास्ते पहुँचे। सरशार ने उसके लिए कैसी लड़की गढ़ी है, इस पर पाठिका अपनी राय रखती थी। कोई तो फ़ासले से सफ़र का हिसाब माँग रहा था, कोई अपने मुहल्ले से बाहर की बोली में मज़ा ले रहा था, और किसी ने नायिका की परवरिश पर लेखक को ही घेर लिया था।

इन चिट्ठियों पर आधारित अध्ययन खोलें

ऐतिहासिक संदर्भ १, ८ / संदर्भ-सूची अंत में

चरित्रावली / १–२

# मियाँ आज़ाद और ख़्वाजा खोजी



## मियाँ आज़ाद

सैलानी, हुनरमंद, हुस्नआरा के चाहनेवाले

कथा-पंक्तियाँ
७५–८३, १६७–१९२, २७२३–२७३२, ७००८–७०६७, १६६०३–१६६११

कभी किसी दोस्त के दस्तरख़्वान पर, कभी हलवाई की दुकान पर, और दोनों हाथ खाली हों तो फ़ाक़ा। आज़ाद की पहचान उनके हुनर और उनकी बातचीत से खुलती है। तलवार से निशान लगा सकते हैं, शेर का मतलब पूछ सकते हैं और एक अजनबी की जान बचाने को दरिया में कूद सकते हैं। शुरू में किस्सागो उनका गाँव और खानदान नहीं बताता। बहुत बाद में आज़ाद ख़ुद को कश्मीर का रहनेवाला कहते हैं।



## ख़्वाजा खोजी

नवाब के दरबार के मसखरे, आज़ाद के साथी

कथा-पंक्तियाँ
८८६–९१२, १७११४–१७१४१, २०६१८–२०६४९

क़द छोटा, बदन दुबला, आँखों में सुरमा। नवाब बुलाएँ तो खोजी अपनी अफ़ीम घोलते हुए भी हाज़िर हो जाते हैं। ज़बान ऐसी तेज़ है कि टट्टू से गिरने में भी अपनी बहादुरी की दलील ढूँढ़ लेते हैं। मगर दोस्त मुसीबत में पड़े तो वही खोजी परदेस में पता पूछते हुए क़ैदख़ाने तक पहुँचते हैं।

चरित्रावली / ३–४

# हुस्नआरा और सिपहआरा



## हुस्नआरा

बड़ी बेगम की बेटी, सिपहआरा की बड़ी बहन

कथा-पंक्तियाँ
६७८१–६८०१, ६८३९–६८४४, ७४२३–७४६१

लोग मुबारकबाद देने आए हैं और हुस्नआरा अपनी छोटी बहन से लिपटकर रो रही हैं। जिस आदमी के मिज़ाज तक की ख़बर नहीं, उससे ब्याह कैसे करें? अपनी पसंद पर उन्हें भरोसा है, और यह ख़याल भी कि लोग उनके फ़ैसले से दूसरी पढ़ी-लिखी औरतों को परखेंगे। आज़ाद से वह ऐसी शोहरत चाहती हैं जो उनके अपने काम की कमाई हो।



## सिपहआरा

हुस्नआरा की छोटी बहन

कथा-पंक्तियाँ
७४४२–७४६४, १२५०८–१२५३९, १२५५६–१२५८५

बड़ी बहन की राज़दार भी हैं और उनकी पहली मुक़ाबिल भी। आज़ाद का ख़त पहले पढ़ने का हक़ वह आसानी से छोड़ेंगी क्या! पर जब हुस्नआरा आज़ाद को लड़ने भेजती हैं, सिपहआरा उनसे लिपटकर फ़ैसला बदलने की मिन्नत करती हैं। किसी को घर से दूर भेजने में जो हिम्मत चाहिए, उसकी क़ीमत उन्हें उसी वक़्त दिखाई दे जाती है।

चरित्रावली / ५–६

# मीडा और क्लारिसा



## मीडा

घुड़सवार, हमसफ़र और बहस की साथी

कथा-पंक्तियाँ
१६४६८–१६४८४, १७०५२–१७०७६, ३३०४९–३३११०

होटल के बाग़ में आज़ाद ने फूल बढ़ाया तो मीडा ने उसे लिया और चुपचाप घोड़े पर बैठकर चली गईं। जॉर्जिया की इस युवती को पियानो और घुड़सवारी, दोनों का शौक़ है। आज़ाद के चेहरे से उनकी तंगी भाँपती हैं और बीस हज़ार का चेक भिजवा देती हैं। दोस्त की मदद करने में जितनी बेझिझक हैं, उससे असहमत होने में भी उतनी ही।



## क्लारिसा

दुश्मन फ़ौज की सवार

कथा-पंक्तियाँ
१९३५२–१९४१३, २०४४४–२०४८०, २०७८३–२०७९९

तलवार लिए घोड़े पर निकलीं क्लारिसा के लिए लड़ाई घर की बात भी है। उनके ब्याह से ठीक पहले उनके मंगेतर को फ़ौज ने बुला लिया था। अख़बार से उन्हें ख़बर मिली कि वह आज़ाद से लड़ते हुए मारा गया। इस शोक में वह आज़ाद को साइबेरिया भेजवाती हैं। बाद में मीडा के साथ भेस बदलकर उसी क़ैदी को छुड़ाने भी पहुँचती हैं।

चरित्रावली / ७–८

# हुमायूँ फ़र और सुरैया बेगम



## हुमायूँ फ़र

सिपहआरा के होनेवाले दूल्हे

कथा-पंक्तियाँ
१५२६५–१५३५५, २१४९७–२१५२०, २५५७४–२५६०५, २५७८६–२५८४३

सिपहआरा की झलक पाने के लिए शाहज़ादा छत पर ठहर जाता है। आग उसे घेर लेती है तो पहले छोटे भाई को माँ का ख़याल रखने को कहता है, फिर सिपहआरा को टोपी उतारकर सलाम करता है। बाद में उसकी नाव डूबती है। लौटकर आए सवार को बहन ख़ुरशेद अपना भाई मानती हैं। कलक्टर सवाल करके उसे दूसरा आदमी मानता है। पाठ उसकी पहचान का अंतिम प्रमाण नहीं देता।



## सुरैया बेगम

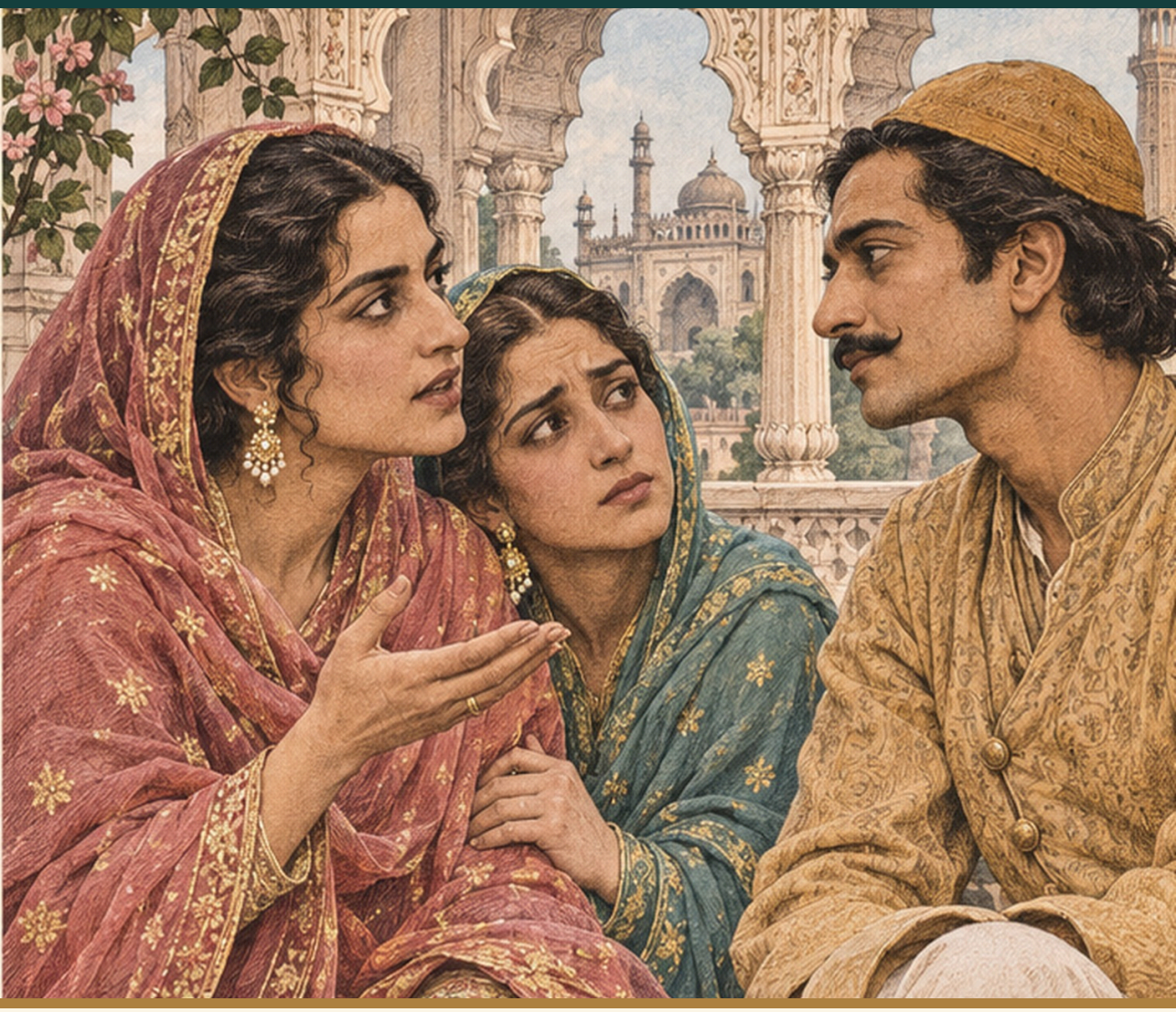
जिनकी कहानी वे ख़ुद सुनाती हैं

कथा-पंक्तियाँ
२९३६५–२९४३२, ३०६०३–३०६२३, ३२६१२–३२६३५, ३२७४३–३२७८६

सराय में आज़ाद उन्हें अलारक्खी के नाम से जानते थे। अब वह एक नवाब की पत्नी हैं। आज़ाद की तस्वीर पहचान लेती हैं, उनकी सलामती चाहती हैं, फिर भी चोरी से मिलने का प्रस्ताव ठुकरा देती हैं। हुस्नआरा की शादी में सुरैया को देखकर औरतों में मत बँटता है। जब उनसे उनके अतीत का सवाल होता है, जवाब वह अपनी ज़बान से देती हैं।

# एक नाम, दो दोस्त

खंड १ / लखनऊ



किसी ने आज़ाद का खानदान नहीं बताया। हुस्नआरा ने उनसे कहा कि वे अपने नाम को ऐसी पहचान दें जिसे किसी खानदान के सहारे की ज़रूरत ही न पड़े।

कथा ०१

# मियाँ आज़ाद का पता

मियाँ आज़ाद का गाँव कौन-सा था? उनके बाप-दादा कौन थे? किस्सागो गाँव और खानदान, दोनों का पता हमसे छिपाए रखता है। हाँ, नाम ऐसा देता है जो उन पर खूब फबता है। कभी किसी दोस्त के यहाँ खाना खा लिया, कभी हलवाई की दुकान पर जा बैठे और कहीं कुछ न मिला तो फ़ाक़ा कर गए। कुश्ती लड़वा लो, तलवार चलवा लो, शायरों के बीच बिठा दो। आदमी हर जगह का था और किसी एक जगह का नहीं था।

चौक में एकरंग की धाक थी। उसके सिवा कौन चंदन के रंग का जोड़ा पहनता! आज़ाद वही रंग पहनकर निकले। आख़िर उतरी तो एकरंग की टोपी, और उतारी भी एक दर्ज़ी ने। बात शहर में फैली। आज़ाद ने मैदान में अपनी तलवार से नींबू को ठीक निशान पर काटकर दिखाया। उन्हें उन बाँकों से चिढ़ थी जो अपना हुनर राह चलते लोगों पर आज़माते थे।

नवाब के दरबार में आज़ाद की मुलाक़ात एक ऐसे आदमी से हुई जो न उनकी तलवार से दबने वाला था, न उनकी ज़बान से। आँखों में सुरमा, छोटा-सा क़द और बात कहने का अपना ही ढंग। ये ख़्वाजा खोजी थे, नवाब साहब के मसखरे। उस दिन कोई उन्हें बताता कि आगे चलकर वे इन्हीं आज़ाद की तलाश में परदेस की ख़ाक छानेंगे तो वह भी उसे खूब सुनाते।

स्रोत पंक्तियाँ ७५–८३, १२१–१९२, ८८६–९१२, ९४४–९५२, १०२३–१०३७, १०४८–१०७५

कथा ०२

# एक हज़ार रुपये का बटेर



खोजी अभी नवाब साहब को समझा रहे थे कि उनके दूध में कितनी मिठास और ज़रा-सा केवड़ा हो, जब एक चोबदार घबराया हुआ आया। जान की अमान मिले तो अर्ज़ करे। पिंजरे से सारे बटेर उड़ गए थे। दरबार में कोई सिर पीटता था, कोई छाती। नवाब को एक की पड़ी थी। सफ़शिकन को जो ले आए उसे हज़ार रुपये नक़द! उसकी नुकीली चोंच और अकड़कर दाना चुगने की अदा उन्हें याद आ रही थी।

कहानी अगले पृष्ठ पर / स्रोत पंक्तियाँ ८८६–९१२, ९४४–१०८५

एक हज़ार रुपये का बटेर

# मौलाना से बटेर को समझाइए

हुक्म हुआ कि सवार पाँच कोस तक जाएँ और उसे समझा-बुझाकर लौटा लाएँ। मगर दरबारियों के मुताबिक़ बटेर अरबी बोलता था। ऊँटवान उससे बहस कैसे करता? एक मौलाना बुलाए गए। नवाब का दुख सुनकर बेचारे समझे कि कोई नालायक बेटा रूठ गया है। खोजी ने सुधारा कि साहबज़ादे बटेर हैं। मौलाना सबकी अक़्ल का हाल पूछते हुए उठ गए।

आज़ाद ने बीड़ा उठाया। एक तेज़ ऊँटनी और राहख़र्च मिल जाए। खोजी को शक हुआ कि यह कल के आए मुसाफ़िर ऊँटनी ही ले भागे तो? नवाब को परवाह नहीं थी। उन्होंने अशर्फ़ियाँ दीं और गले लगाकर विदा किया। आज़ाद ने ऊँटनी सराय में बाँधी और रात अपने घर सोए। सवेरे कभी सवार, कभी पैदल शहर की गलियाँ नापते। बटेर की तलाश में लखनऊ देखने की कैसी राह खुली थी!

### साँड़नी

तेज़ चाल की ऊँटनी, जिसे सफ़र के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

स्रोत पंक्तियाँ ८८६–९१२, ९४४–१०८५

कथा ०३

# हुक्के की चिंगारी और आम की गुठली

एक दिन आज़ाद एक मकतब में पहुँचे। लड़के किताबों पर झूल रहे थे। उस्ताद को ऊँघ आई, हुक्का गिरा और चिनगारियाँ किताबों पर जा पड़ीं। अब जो चपतें पड़ीं तो लड़कों को। घर लौटकर आज़ाद ने मोटे अक्षरों में बारह बातें लिखीं। बच्चे दिन भर क्यों क़ैद रहें? जो पढ़ें उसका मतलब भी समझें। उस्ताद उनसे चिलम भरवाना छोड़ें। रात को वह कागज़ मकतब के दरवाज़े पर चिपका आए और शहर में भी दो-चार जगह लगा आए। सुबह भीड़ लगी। किसी ने उसे अदालत का सम्मन समझा, किसी ने तमाशे का इश्तिहार। सवाल मौलवी साहब से भी हुए। जब उन्होंने दजला और फ़रात को हिंदुस्तान की नदियाँ बताया, तो लोग उन्हीं से कहने लगे कि अब अपना असबाब बाँधिए।

रेल में उनकी इसी पूछने की आदत ने एक डींग की तह खोल दी। स्टेशन पर आम और ख़रबूज़ों की टोकरियाँ देखकर एक मुसाफ़िर चले अपने खाने के क़िस्से सुनाने। मगर चपरासी दिखा तो मुँह चादर में छिपा लिया। आज़ाद ने पूछा तो कबूल किया कि आम-ख़रबूज़ों के शौक़ में क़र्ज़ लिया, दोस्त के मकान का अपने नाम से सौदा कर डाला और अब मुक़दमे से भाग रहे हैं। उधर एक और मुसाफ़िर ने टिकट के पैसे लँगड़े आम पर उड़ा दिए थे। आज़ाद अपना टिकट दिखाकर बाहर निकले। आम के दूसरे शौक़ीन अभी टिकट-बाबू को जवाब दे रहे थे।

स्रोत पंक्तियाँ २४२३–२४४२, २४८४–२५०४, २५२३–२५५६, २७३९–२७९६, ५५५९–५६३५, ५६५२–५६८६

कथा ०४

# बजरे पर कौन बचा?

उधर बड़ी बेगम के घर उनकी बड़ी बेटी हुस्नआरा का रिश्ता एक रईस के बेटे से तय हुआ। सहेलियाँ बधाई देतीं और हुस्नआरा अपनी छोटी बहन सिपहआरा से लिपटकर रोती। जिस आदमी को देखा तक नहीं, जिसके मिज़ाज की ख़बर नहीं, उसके साथ उम्र कैसे गुज़रेगी? फिर एक दिन सिपहआरा ख़बर लाई कि अम्माँ ने हुस्नआरा को अपनी पसंद से शादी करने की छूट दे दी है।

बादल घिरे थे जिस दिन बहनें पीरबख्श के बजरे पर सैर को निकलीं। पहले बूँदें अच्छी लगीं, फिर हवा ने नाव को चकरघिन्नी बना दिया। बिजली चमकी तो सिपहआरा घबराकर दौड़ी और दरिया में जा गिरी। किनारे टहलते आज़ाद ने छलाँग लगाई। भँवर में एक बार सिपहआरा हाथ से छूट भी गई। उन्होंने फिर उसे सँभाला। उनकी पुकार पर किनारे से एक बुज़ुर्ग भी पानी में उतरे। पीरबख्श अपनी लंबी नाव उनकी ओर मोड़ ही रहे थे कि एक मगर ने उन्हें निगल लिया। बजरा दिखा तो बची हुई ताक़त लगाकर उसके पास पहुँचे और सिपहआरा को उस पर लिटा दिया। हुस्नआरा की आँख खुली तो पहला सवाल छोटी बहन का था।

वापसी में दोनों ने बजरे पर चढ़ने से साफ़ इनकार किया। पीरबख्श नाव ले आएँगे, बाक़ी तीनों पैदल जाएँगे। राह में आज़ाद ने हुस्नआरा से अपने दिल की बात कह दी। उसने सिर झुका लिया। शादी की बात पर उससे साफ़ जवाब मिलना अभी बाक़ी था।

स्रोत पंक्तियाँ ६७८१–६८०१, ६८३९–६८४४, ७००८–७०६७, ७१०८–७१४०

कथा ०५

# हुस्नआरा की शर्त

हुस्नआरा ने साफ़ बात की। उसे आज़ाद की क़ाबिलियत पर शक नहीं था। मगर उसका घर-ख़ानदान पूछने पर वह किसका नाम ले? उसे डर था कि उसकी पसंद पर उँगली उठी तो बदनामी पढ़ी-लिखी औरतों की होगी। उसने चाहा कि आज़ाद कोई ऐसा काम करें जिससे लोग उन्हें उनके अपने नाम से पहचानें। सिपहआरा ने सुझाया कि एक किताब लिखें। हुस्नआरा के मन में दूसरा ख़याल था। रूम, यानी तुर्कों के मुल्क, और रूस के बीच लड़ाई छिड़ने वाली थी। आज़ाद रूम की तरफ़ से लड़ें और बहादुरी का तमगा लेकर लौटें। आज़ाद राज़ी हो गए। सिपहआरा उलटे बड़ी बहन से लिपट गई कि उन्हें जाने से रोक लो।

खोजी ने साथ चलने की हामी बड़ी जल्दी भर दी थी। वह रूम को लखनऊ के आसपास समझे बैठे थे! समुंदर पार का नाम सुना तो आज़ाद को तोप और गोली के ख़तरे गिनाने लगे। फिर भी जब जहाज़ पर चढ़ने का दिन आया, खोजी उनके साथ थे। घर पहुँची चिट्ठी सिपहआरा ने पढ़ सुनाई। आज़ाद ने लिखा था कि वह ख़ुश हैं, बस हुस्नआरा के बेचैन होने का डर है। और खोजी? पानी को देखते ही उनका जी मचल रहा था।

स्रोत पंक्तियाँ ७४२३–७४६१, ७८९६–७९३५, १२४९८–१२५३९, १२५४५–१२५६०

# घर से दूर

खंड २ / रूम और लखनऊ



आज़ाद फ़ौज में पहुँचे। सिपहआरा ने जलती छत पर एक जान को घिरते देखा। दोनों जगह किसी के लौट आने का इंतज़ार था।

कथा ०६

# आग के उस पार

आज़ाद समुंदर पर थे। लखनऊ में खाना खाने को बैठीं हुस्नआरा ने सुना कि उनकी शादी के लिए फिर किसी रईस के बेटे की बात चल रही है। लड़का अच्छा है, घोड़े आठ हैं। ज़रा सोचिए, उस लड़की के गले से निवाला कैसे उतरता जिसने अभी एक बेठिकाने आदमी को उसका अपना नाम कमाने के लिए परदेस भेजा था?

उधर शाहज़ादे हुमायूँ फ़र को सिपहआरा की एक झलक की आस थी। एक रात इसी आस में वह छत की महताबी, यानी खुली बैठक, में सो गए। पड़ोस की छत पर बहनें चाँदनी देख रही थीं। ग्यारह बजे शोर मचा। जिस कोठी से आग उठ रही थी, उसी की छत पर सिपहआरा को शाहज़ादा दिखाई दिया। नीचे लोग पानी ला रहे थे। ऊपर से उन्होंने अपने छोटे भाई को आवाज़ दी कि अम्माँ को सँभालना।

आग पास पहुँची। शाहज़ादे ने टोपी उतारी, सिपहआरा को सलाम किया और कूद गए। उधर सिपहआरा ने भी खिड़की से छलाँग लगा दी। उन्हें चोट नहीं आई। शाहज़ादा गीली घास पर बेहोश पड़ा था, टाँग ज़ख़्मी थी, मगर साँस चल रही थी। अगले दिन एक ख़त मिला। शहसवार नाम के आदमी ने आग को अपना बदला बताया था। उस रात दोनों की जान बची। उनकी शादी होगी या नहीं, यह बात अभी तय होनी थी।

स्रोत पंक्तियाँ १२६९१–१२९१४, १३६६८–१३७००, १५२६५–१५३८३

कथा ०७

# मीडा की मुस्कान



रूम के एक होटल में आज़ाद ने जॉर्जिया की मीडा को फूल दिया। वह फूल लेकर घोड़े पर बैठीं और चली गईं। शाम को नक़ाब उठाकर वही फिर सामने थीं। मीडा के जाते ही एक फ़्रांसीसी अफ़सर ने दावा किया कि उससे मीडा की शादी होने वाली है और तलवार खींच ली। पीछे से उसके दोस्त का वार आज़ाद के कंधे पर पड़ा। फिर भी उन्होंने अफ़सर को निहत्था कर दिया।

कहानी अगले पृष्ठ पर / स्रोत पंक्तियाँ १६४६८–१६६३०, १६६३४–१६६७०

मीडा की मुस्कान

# फ़्रांसीसी क़ैदी का भेद

दूसरे दिन मीडा ने आज़ाद से ख़ुद शादी की बात कही। उन्हें चाहने पर भी वह हुस्नआरा को दिया क़ौल कैसे तोड़ते? उसी रात मीडा ने जंग के वज़ीर हमीद पाशा से कहा कि आज़ाद रूस के जासूस हैं। घर लौटीं तो अपने किए पर पछताईं। उधर जेल में इलज़ाम लगानेवाली का नाम सुनकर आज़ाद को ऐसा सदमा पहुँचा कि बुख़ार चढ़ आया।

बीमार क़ैदी को सैर की इजाज़त थी। एक शाम घोड़े पर एक जवान उनसे मिलने आया। वह मुस्कराया तो आज़ाद पहचान गए। मीडा थीं। उन्होंने अपनी करनी की माफ़ी माँगी। रिहाई फिर भी एक और मुलाक़ात के बाद मिली। जेल में फ़्रांसीसी बना एक क़ैदी आज़ाद के सामने तुर्कों को कोसता रहा। उन्होंने उनकी तरफ़दारी की। वह हमीद पाशा का भेजा तुर्क अफ़सर था। दूसरे दिन जेल का दरवाज़ा खुल गया।

### मुख़बिर

छिपकर किसी पक्ष को ख़बर देने वाला। युद्ध के दिनों में यह इलज़ाम आज़ाद को क़ैद करा देता है।

स्रोत पंक्तियाँ १६४६८–१६६३०, १६६३४–१६६७०

कथा ०८

# मीडा का लिफ़ाफ़ा

रिहाई मिल गई। अब रूम की घुड़सवार फ़ौज में जगह भी मिल गई। आज़ाद को तो घर ख़ुशी की ख़बर भेजनी चाहिए थी। वह चुपचाप बैठे रहे। वर्दी और बाक़ी तैयारी पर दस हज़ार रुपये लगने थे, और जेब में एक टका न था।

सोचा, पहले कोई नौकरी कर लूँ, पैसे इकट्ठे हो जाएँ तो फ़ौज में जाऊँ। तभी मीडा मुबारकबाद देने आ पहुँचीं। आज़ाद ने कहा कि वह उदास नहीं हैं। मीडा ने उन्हें आईना देख लेने को कहा। तब असली बात खुली। थोड़ी देर बाद मीडा का आदमी एक लिफ़ाफ़ा लाया। उसमें बीस हज़ार का चेक था। आज़ाद ख़ुश भी थे और कुछ झेंपे भी कि मीडा ने उनकी तंगी के बारे में क्या सोचा होगा। अगले दिन वह घोड़े पर चढ़े अपनी टुकड़ी के साथ जा रहे थे। छत से खोजी उन्हें बुलाते रहे। तोपख़ाने की घड़घड़ाहट में जब जवाब न मिला तो उन्हें लगा, मियाँ को ओहदा मिलते ही उनके मिज़ाज बदल गए!

आज कुछ रौनक हमारे हिस्से भी आए, यह कसक खोजी को हमेशा थी। मीडा ने अपनी सहेली मिस रोज़ से शादी की बात छेड़ी तो उन्होंने सचमुच बारात निकाल दी। पता किसी को मालूम नहीं था। जुलूस ग़लत कोठी जा पहुँचा, जहाँ मातम हो रहा था। दरबान डंडे लेकर निकले। मशालें गिरीं, टट्टू भागा और दूल्हा अकेला होटल लौट आया।

स्रोत पंक्तियाँ १७०४७–१७२०७

कथा ०९

# क़ैदी का दोस्त

दरिया के उस पार रूसी फ़ौज थी। उसके आगे तलवार और नेज़ा लिए एक घुड़सवार औरत निकली। वह क्लारिसा थीं। अगले दिन दोनों फ़ौजों के सामने उनकी और आज़ाद की मुठभेड़ हुई। आज़ाद उनके वार बचाते रहे, मगर जब बाज़ी पलटी तो वह उनके घोड़े से लटके हुए रूसी सिपाहियों के बीच जा पहुँचे। वहीं पकड़ लिए गए।

क्लारिसा के लिए यह लड़ाई बहुत निजी थी। वह बाद में मीडा को बताती हैं कि जिस युवक से उनकी शादी होने वाली थी, उसे ब्याह से एक दिन पहले फ़ौज का बुलावा आ गया था। अख़बार में उन्होंने पढ़ा कि वह आज़ाद से लड़कर मारा गया। आज़ाद को साइबेरिया भेजने के फ़ैसले के पीछे उसी मौत का दुख था। पहरेदार उन्हें डैन्यूब पार ले गए। एक सुबह वह अपने को पोलैंड की एक शाहज़ादी की पहाड़ी कोठी में पाते हैं। वहाँ भी घर लौटने की आज़ादी नहीं थी।

खोजी को ख़बर मिली तो पूछते-पूछते कोठी तक जा पहुँचे। आज़ाद ने उन्हें देखते ही गोद में उठा लिया। दोस्त की ऐसी सूरत बनी थी कि खोजी उन्हीं से कहने लगे, मुझे छोड़ो, मैं अपने आज़ाद को ढूँढ़ने आया हूँ! कुछ देर में पहचान भी हुई और मशवरा भी शुरू हो गया। मीडा और क्लारिसा तक दो नौजवानों का भेस धरकर उन्हें छुड़ाने की कोशिश में वहाँ पहुँचीं। जिसे मैदान में क्लारिसा ने क़ैद कराया था, अब वह ख़ुद उसी के निकलने की राह खोज रही थीं।

स्रोत पंक्तियाँ १९१५२–१९१८०, १९३५२–१९४१३, १९४९०–१९५७४, २०२१४–२०३०२, २०४२२–२०४८०, २०६१८–२०६४९, २०७८३–२०८१०

कथा १०

# शाहज़ादे की दो पहचानें

इसी बीच लखनऊ में एक शादी की तैयारियाँ शुरू हुईं और देखते ही देखते थम गईं। हुमायूँ फ़र अपनी शादी का सामान लेने सौदागरों के यहाँ घूम रहे थे। बड़ी बेगम के घर गाना हो रहा था। फिर एक शाम शाहज़ादे की नाव आँधी में फँसकर डूब गई। माँ ने बेटी सिपहआरा को फ़ौरन ख़बर देने की हिम्मत नहीं की। वह लड़कियों को बाग़ में ले गईं। वहाँ सिपहआरा अब्बासी से कहने लगीं कि निकाह के बाद वे शाहज़ादे को इसी बाग़ में लाएँगी। अब्बासी के आँसू निकल पड़े। सिपहआरा अब भी सोच रही थीं कि यहाँ दोनों कितने दिन ठहरेंगे।

कुछ हफ़्ते बाद यही सिपहआरा शाहज़ादे की क़ब्र पर चढ़ाने को फूल चुन रही थीं। एक फ़क़ीर का दावा था कि हुमायूँ फ़र ज़िंदा हैं। बात सुनकर पहले तो उन्हें यक़ीन ही न हुआ। फिर एक रात ऐसी तेज़ रोशनी हुई कि लोगों की आँखें झपक गईं। एक सवार सामने आया। हुस्नआरा ने शाहज़ादे की बहन ख़ुरशेद से पूछा कि क्या वह अपने भाई को पहचानती हैं। ख़ुरशेद को कोई शक नहीं था। शहर में इसी बात पर दो राय हो गईं। एक अख़बार ने कहा कि उसकी माँ और बहनें उसे जानती हैं। दूसरे ने पूछा कि बेगम की जायदाद पर किसी और की नज़र तो नहीं।

कलक्टर और पुलिस के कप्तान मिलने पहुँचे। पहले एक रुक़्क़ा आया। कलक्टर ने जेब से शाहज़ादे का पुराना ख़त निकाला। लिखावट मिली। फिर बरामदे में बैठकर उन्होंने उस आदमी से अपनी दी हुई एक चीज़ के बारे में पूछा। उसे कुछ याद नहीं था। कई और सवाल भी ख़ाली गए। लौटते वक़्त कलक्टर को यक़ीन था कि सामने बैठा आदमी कोई और है। उस मुलाक़ात का हाल यहीं थमता है। माँ और बहन ने अपना कहा था, कलक्टर को पराया लगा। उस आदमी के बारे में इससे आगे कुछ पक्का नहीं मिलता। सिपहआरा के जीवन की एक बात आख़िर में साफ़ होती है। उन्होंने मिरज़ा हुमायूँ फ़र के छोटे भाई से निकाह किया।

स्रोत पंक्तियाँ २१३४९–२१३६५, २१४९७–२१५४६, २५३८०–२५४४५, २५५७७–२५६०५, २५७८६–२५८४३, ३३१११–३३१२४

# जिसके लिए गए थे

खंड ३ / वतन वापसी



कुस्तुंतुनिया में आज़ाद को पाशा का ख़िताब मिलता है। मगर लखनऊ पहुँचकर भी हुस्नआरा तक जाने वाली राह सीधी कहाँ है!

कथा ११

# घर की राह खुली

आख़िर पोलैंड की शाहज़ादी से विदा मिली। उनके एक आदमी ने आज़ाद को ऐसे रास्तों से निकाला जहाँ रूसी पहरेदार उन्हें देख न सकें। दोनों दिन में छिपते, रात में चलते। हफ़्ते भर बाद आज़ाद फिर लड़ाई के मैदान में थे। घेरे हुए क़िले की दीवार टूट गई थी। भूखे सिपाही कई बार निकलकर लड़े और पीछे हटे। लड़ाई का आख़िरी शब्द किसी योद्धा का ललकारा नहीं था। ऊपर से हुक्म आया कि फ़ौजें हट जाएँ, सुलह की बातचीत चल रही है।

कुस्तुंतुनिया पहुँचने पर बादशाह ने आज़ाद की दावत की और उन्हें पाशा का ख़िताब दिया। लखनऊ में हुस्नआरा ने जिस पहचान की बात कही थी, वह उन्हें मिल गई। होटल में दूसरी ख़ुशी राह देख रही थी। खोजी उनसे मिलने आए, फिर मीडा और क्लारिसा भी। चारों भारत की तरफ़ चल पड़े। रास्ते में मिस्र में ठहरना पड़ा।

समुंदर में तूफ़ान आया तो खोजी ने अपनी अफ़ीम की डिबिया कमर से बाँधी और अपनी प्यारी शिताबजान की याद में गाने लगे। एक मुसाफ़िर ने ऐसा इत्मीनान देखा तो उन्हें पहुँचा हुआ फ़क़ीर समझ बैठा और उनकी ऊटपटाँग नसीहतें तक लिख लीं। यों रास्ता कट गया। बम्बई दिखाई दी तो खोजी ने शिताबजान को इतनी दूर से पुकारा मानो वह किनारे खड़ी उनका इंतज़ार कर रही हों।

स्रोत पंक्तियाँ २४५१७–२४६४०, २६६७०–२६७६२, २६८०९–२६८२१

कथा १२

# लौटनेवाले को पहचानो

बम्बई में जहाज़ ने लंगर डाला। मिरज़ा साहब आज़ाद से गले मिले। उनके घर में एक शिकायत उनका इंतज़ार कर रही थी। इतनी दूर रहे और एक ख़त तक नहीं भेजा! हुस्नआरा ने तो यहाँ तक लिख भेजा था कि जिस दिन आज़ाद पहुँचें, उसी दिन तार से इत्तला दी जाए।

बम्बई से चलकर आज़ाद को दो पुरानी परिचित बहनों, ज़ीनत और अख़्तर, की याद आई। उनके क़स्बे में एक गाड़ी से किसी ने आज़ाद की नई सजधज पर ऐसी चुहल की, जैसे उन्हें बरसों से जानती हो। परदा हटा। चेहरा जाना-पहचाना था, आवाज़ भी। नाम याद न आया। तब उसने एक ग़ज़ल छेड़ी। आज़ाद को याद आ गया, यह तो जहूरन है! उसी से बहनों की ख़बर मिली। अख़्तर का पहला शौहर उनके गहने बेचकर चला गया था। अब उनकी शादी एक डॉक्टर से हुई थी। ज़ीनत के शौहर स्कूल में पढ़ाते थे। बहनों से मिलकर आज़ाद आगे बढ़े। लखनऊ में मीडा और क्लारिसा को होटल पहुँचाया और ख़ुद तुर्की वर्दी पहने नवाब साहब के यहाँ जा पहुँचे। नवाब उठकर दौड़े और उनसे लिपट गए।

कथा १३

# सुरैया ने तस्वीर पहचान ली

लखनऊ लौटकर आज़ाद को एक पुरानी जान-पहचान की भी ख़बर मिली। सराय में जिस औरत को वे अलारक्खी के नाम से जानते थे, वही अब सुरैया बेगम थीं। उनका निकाह एक नवाब से हो चुका था। उनके घर में आज़ाद का आना आसान नहीं था। एक चूड़ीवाली ने उनकी तस्वीर अपनी टोकरी में रख ली। सुरैया ने तस्वीर हाथ में लेते ही पूछ लिया कि यह कहाँ मिली।

चूड़ीवाली ने चाहा कि दोनों की मुलाक़ात करा दे। सुरैया ने आज़ाद की सलामती की दुआ दी, पर अकेले मिलने से इनकार किया। एक-दूसरे को चोरी से देख भी लिया तो उससे हासिल क्या होगा? उनकी ज़िंदगी बदल चुकी थी। आज़ाद के लिए दिल में इज़्ज़त थी। उन्होंने कहलवाया कि ख़ुदा ने चाहा तो हुस्नआरा की शादी में मिलेंगे। बाद में एक और सहेली ने आज़ाद की तरफ़ से बहुत कहा। सुरैया ने अपना जवाब नहीं बदला।

शादी के दिन उनकी पालकी सचमुच बड़ी बेगम के दरवाज़े पर आकर रुकी। सुरैया दुलहन को देखने आई थीं। कुछ मेहमानों को उनका आना अखरा, कुछ ने उनकी तरफ़दारी की। एक ने पूछ लिया कि कभी जिस पादरी के यहाँ पनाह ली थी, वहाँ से निकलीं क्यों। सुरैया ने अपनी ज़बानी बताया। पादरी के भतीजे ने उनका हाथ पकड़कर ज़बरदस्ती शराब पिलानी चाही थी। पादरी आया तो उसने इलज़ाम उन्हीं पर रख दिया। उनकी बात सुने बग़ैर चले जाने को कहा। उस रात वे वहाँ से निकल गई थीं। महफ़िल ने सुरैया के बारे में कितनी ही कहानियाँ सुनी थीं। आज जवाब देने को वे ख़ुद बैठी थीं।

स्रोत पंक्तियाँ २२२३७–२२२५९, २५२४७–२५२८२, २९३६५–२९४३२, ३०६०३–३०६३२, ३२६१२–३२६३५, ३२६८१–३२७१५, ३२७४३–३२७८६

कथा १४

# खोजी का भूला हुआ भाई



हुस्नआरा को आज़ाद के आने की ख़बर देने खोजी निकले ही थे कि होटल की ओर अपनी ही शक्ल का एक आदमी आता दिखा। वही छोटा क़द। वह भी मसखरा था। जब तक कोई पहचाने कि ये एक-दूसरे के हैं कौन, दोनों अपनी ताक़त आज़माने लगे। कुश्ती लड़कर हाँफ रहे थे, मगर ज़बान को दम लेने की क्या ज़रूरत! तमाशाई चपतों की गिनती बोलते जाते थे और दोनों चोट का बदला चोट से देते थे।

कहानी अगले पृष्ठ पर / स्रोत पंक्तियाँ ३०६५०–३०६८८, ३०७७४–३०८५३

खोजी का भूला हुआ भाई

# अब्बा का नाम क्या था?

आख़िर थककर दोनों गिरे और रोने लगे। खोजी ने आज़ाद को हिदायत दी कि मेरी क़ब्र किसी पोस्त के खेत के पास बनवाना। दूसरे को अपने वालिद के पास दफ़न होना था। पिता का नाम सुनते ही खोजी की सिसकियाँ बदल गईं। ज़रा फिर तो कहिए, इनके वालिद कौन थे? अभी जो एक-दूसरे पर चढ़े बैठे थे, अब गले लगे रो रहे थे।

वह खोजी के बड़े भाई मियाँ रईस निकले। उम्र में कोई बीस बरस का फ़र्क़ था। रईस को याद था कि अब्बा उन्हें रोज़ लकड़ी की टाल पर ले जाते थे। कुछ दिन साहब लोगों के यहाँ खानसामा भी रहे थे। खोजी भाई को घूरें और रईस अब्बा के किस्से सुनाएँ! आज़ाद हटे तो भाइयों में ख़ूब तकरार हुई। थोड़ी देर बाद दोनों साथ-साथ शहर की सैर करने निकल गए।

### टाल

लकड़ी बेचने का ठिकाना। पिता का ज़िक्र आते ही दोनों भाइयों के लिए कुश्ती का मायना बदल जाता है।

कथा १५

# हुस्नआरा ने धीरे से हामी भरी

आज़ाद को अपनी बरात की धूमधाम ज़रूरी नहीं लगती थी। बड़ी बेगम की तमन्ना थी कि बेटी की शादी देखने लायक़ हो। बरात चली तो आगे निशान का हाथी था। उसके सामने अनार छूटते थे। चौक में बाजा पहुँचा तो ऊपर के कमरों तक तमाशाई भरे थे। खोजी को शहनाई बजानेवालों से शिकायत थी। उनकी फ़रमाइश पर कोई ध्यान ही न देता था। आख़िर उन्होंने गाकर समझाना शुरू कर दिया।

उधर सात सुहागिनों ने हुस्नआरा को सँवारा। क़ाज़ी दो गवाहों को लेकर पहुँचे और पूछा कि आज़ाद पाशा से निकाह मंज़ूर है? हुस्नआरा ने सिर झुका लिया। माँ ने कहा, बेटी, कह दो। बहनें क़रीब खिसक आईं। बड़ी देर में हुस्नआरा ने इतनी धीमी हामी भरी कि क़ाज़ी बोले, मैंने तो सुना ही नहीं। बड़ी बेगम ने कहा कि उन्होंने सुना है और गवाह भी मौजूद हैं। क़ाज़ी बाहर गए। आज़ाद ने साफ़ आवाज़ में निकाह क़ुबूल किया। महफ़िल में मुबारकबाद गाई जाने लगी।

दोनों एक पलंग पर बिठाए गए। बहार ने दुलहन की जूती दूल्हे के कंधे से छुआ दी। शादी के आईने, यानी आरसी, के सामने हुस्नआरा आँखें मूँदे बैठी थीं। घर की औरतों ने ज़िद की कि दूल्हे मियाँ पहले कहें कि अब वह बीवी के ग़ुलाम हैं। आज़ाद ने ख़ुशी-ख़ुशी कह भी दिया। सबको हँसी की उम्मीद थी। पर जब हुस्नआरा ने आँखें खोलीं तो उनमें आँसू भरे थे। आज़ाद ने झुककर उनके कान में दिल मज़बूत रखने को कहा। उनका जी सँभला तो उन्होंने दुलहन को गोद में उठाकर सुखपाल, यानी विदाई की पालकी, में बिठाया। पीछे बड़ी बेगम रो रही थीं। रूहअफ़ज़ा ने दुआ की कि आज़ाद ने जितनी तकलीफ़ें उठाई हैं, अब उन्हें उतना ही आराम मिले।

स्रोत पंक्तियाँ ३०६३८–३०६५०, ३२००९–३२०२८, ३२२९८–३२३२३, ३२६०४–३२६१२, ३२८११–३२८४२, ३२९१९–३२९३९, ३२९४८–३२९६३, ३२९७३–३३०३७, ३३०४४–३३०६९, ३३०८०–३३१२४

कथा १६

# बैठक में आख़िरी मेहमान

विदाई की पालकी चली गई और ब्याह का क़िस्सा पूरा हुआ। मगर एक पुराना साथी अभी दरवाज़े पर खड़ा है। जिस खोजी ने पहली मुलाक़ात में आज़ाद पर सवारी लेकर चंपत हो जाने का शक किया था, वह उम्र भर उनके वफ़ादार दोस्त रहे। उनकी अफ़ीम की डिबिया और करौली, वह छोटी कटार जिसका नाम लेते ही उन्हें दस आदमियों का दम आ जाता था, दोनों का ज़िक्र आख़िर तक उनके साथ रहा।

मीडा और क्लारिसा ने हिंदी और उर्दू पढ़ीं और औरतों की सेवा को अपने जीवन का काम बनाया। क्लारिसा कलकत्ते की ओर चली गईं। बम्बई से लौटीं मीडा एक दिन आज़ाद के पास बैठीं तो थियॉसफ़ी की चर्चा छिड़ गई। इस आध्यात्मिक विचारधारा में मीडा का विश्वास था। उनका कहना था कि उन्होंने किसी को बंद ख़त बग़ैर खोले पढ़ते देखा है। आज़ाद को इस पर यक़ीन नहीं हुआ। मीडा ने कहा, जिसे तार भेजने का भेद मालूम न हो, उसे उसकी खटखट भी तो जादू जान पड़े!

बात अभी चल ही रही थी कि बैरा एक कार्ड ले आया। आनेवाले मिरज़ा हुमायूँ फ़र के छोटे भाई थे, जिनसे सिपहआरा का निकाह हुआ था। मीडा भी उनसे मिलना चाहती थीं। आज़ाद उठे और दीवानख़ाने की तरफ़ चले गए।

स्रोत पंक्तियाँ ३३०४४–३३१२४

चित्र और विस्तृत कथा

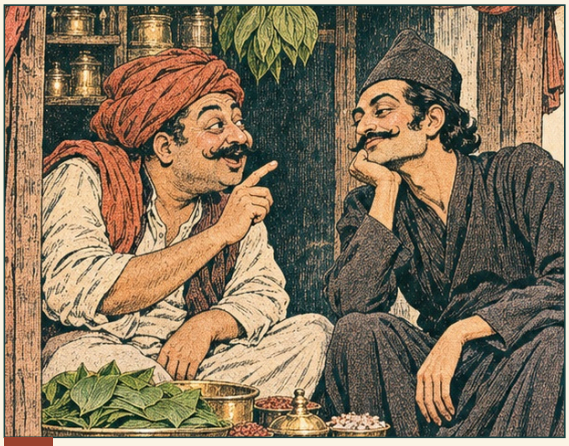
# चित्रकथा की फ़ेहरिस्त

हर किस्से का पहला पन्ना चित्रों का है। उसके बाद दो पन्नों में उसी प्रसंग का विस्तार पढ़िए।

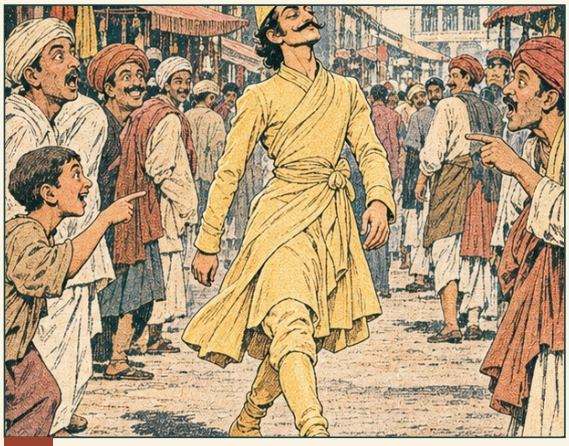
| | | |
|---|---|---|
| ०१ | संदली जोड़े की शर्त | ३५ / ३६ |
| ०२ | मकतब में किसकी ख़ता? | ३८ / ३९ |
| ०३ | आमपुर या ख़रबूजानगर? | ४१ / ४२ |
| ०४ | एक ख़त, दो बहनें | ४४ / ४५ |
| ०५ | छत से आख़िरी सलाम | ४७ / ४८ |
| ०६ | खोजी की बारात | ५० / ५१ |
| ०७ | पानी माँगा, ढेले मिले | ५३ / ५४ |
| ०८ | लिखावट तो वही है! | ५६ / ५७ |
| ०९ | जहाज़ पर खोजी की तान | ५९ / ६० |
| १० | मीडा और बंद ख़त | ६२ / ६३ |

पहला पृष्ठांक चित्र का, दूसरा कथा का है।

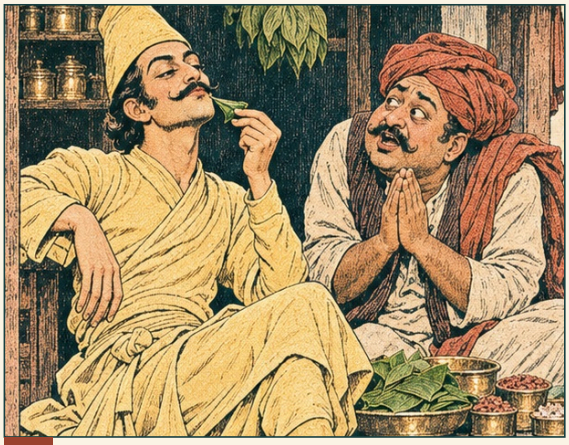
# संदली जोड़े की शर्त



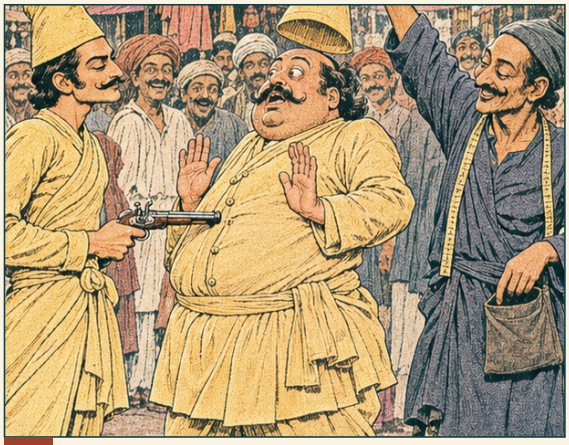
१ तंबोली ने राज़ खोला। संदली रंग का जोड़ा पहनने की मजाल शहर में बस एकरंग को थी।



२ अगले दिन आज़ाद के बूट, घुटन्ना, अंगरखा और टोपी सब संदली थे। गली भर की उँगलियाँ उनकी तरफ़ उठीं।



३ तंबोली ने हाथ जोड़े। टोपी ले लें, जूता बदल लें! आज़ाद ने गिलोरी ली और वहीं डट गए।



४ एकरंग ने टोपी उतारने को कहा। आज़ाद ने उसकी तोंद पर तमंचा रखा। एक दर्ज़ी ने एकरंग की टोपी उतारकर जेब में रख ली।

विस्तृत कथा / पहला पन्ना

# हँसी पर चली गोली

लखनऊ के चौक में एक दिन एक दुकानदार को हँसी आ गई। सामने से एक बाँका चला आ रहा था। बस इतनी-सी बात पर उसने कमर से तमंचा निकाला और दाग दिया। गोली खाली गई। लोगों ने पूछा, आख़िर इसने तुम्हारा बिगाड़ा क्या था? जनाब का जवाब सुनिए। दुकानदार उन्हें देखकर दाँत निकाल रहा था, सो उन्होंने चाहा कि गोली दाँत पर लगे और उसके दाँत खट्टे हो जाएँ। अपनी जान से जाता तो दुकानदार जाता, बाँके का मुहावरा दुरुस्त बैठता!

मियाँ आज़ाद उस वक़्त बाँके के साथ ही थे। रास्ते में वह अपने उस्ताद के इतने दाँव गिना चुका था कि आज़ाद भी उसके पीछे हो लिए थे। अब मालूम हुआ कि इस हुनर की ज़द में वे लोग भी आते हैं जिनके हाथ में कोई हथियार ही नहीं। एक तंबोली से पूछने लगे कि शहर में ऐसे बाँके बहुत हैं क्या। उसने इनके सरगना का पता दिया। एकरंग नाम है। चंदन के रंग का जोड़ा पहनकर निकलते हैं। और कोई वही रंग पहनकर देखे तो सही! एकरंग को इतने भरे शहर में एक रंग के लिए भी कोई दूसरा आदमी मंज़ूर नहीं था।

स्रोत पंक्तियाँ ७५–८३, ८६–१०६, १२१–१६८

विस्तृत कथा / दूसरा पन्ना

# किसकी टोपी उतरी?

दूसरे दिन आज़ाद निकले तो बूट संदली, घुटन्ना संदली, अंगरखा संदली और सिर पर टोपी भी संदली। जिस गली से गुज़रे, उँगलियाँ उठीं। चेले एकरंग को ख़बर देने दौड़े। आज़ाद इत्मीनान से पानवाले के यहाँ जा खड़े हुए। तंबोली ने हाथ जोड़ लिए। भगवान के लिए उसकी टोपी ले लें, या जूता ही बदल डालें। आज़ाद ने उसकी गिलोरी ली। टोपी और जूता अपने ही रखे। अब तक चौक में इतने लोग जमा हो गए थे मानो तलवार चलने की मुनादी हुई हो। फिर एकरंग दिखाई दिया। एक पल में किसी को अपना घर याद आया, किसी को गली, किसी को कोठे की छत।

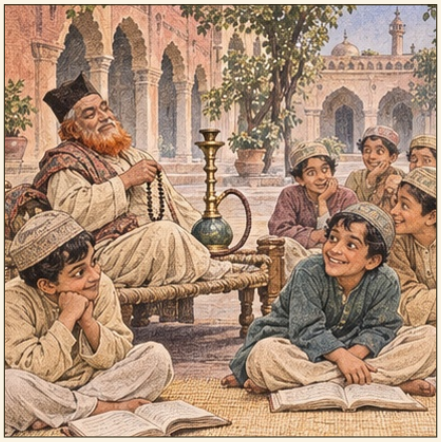
एकरंग ने आते ही टोपी उतारने और जूता बदलने का हुक्म दिया। आज़ाद ने पैंतरा बदला और इससे पहले कि वह हाथ चला पाता, तमंचा उसकी तोंद से लगा दिया। अब वही हुक्म एकरंग को सुनना पड़ा। इतने में उधर से एक दर्जी निकला। उसने एकरंग की टोपी उतारी, अपनी जेब में रखी और एकरंग कुछ न कर सका। यह ख़बर सारे शहर में पहुँची। कल चौक में एक आदमी की हँसी पर गोली चली थी। आज एकरंग की टोपी उछली और तमंचा चलाने की नौबत तक न आई।

### बाँका

सज-धज और अकड़ से चलने वाला आदमी। यहाँ बाँके हथियार चलाने में अपनी उस्तादी का रौब भी दिखाते हैं।

स्रोत पंक्तियाँ ७५–८३, ८६–१०६, १२१–१६८

# मकतब में किसकी ख़ता?



०१

## उस्ताद की नज़र

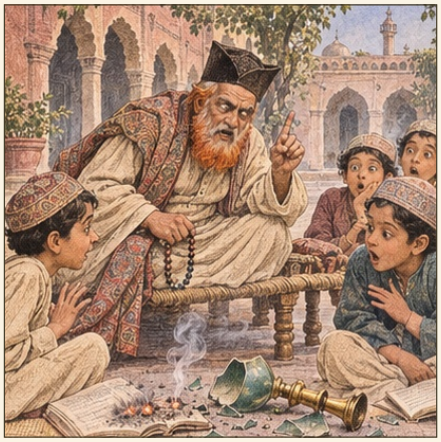
मौलवी साहब की तसबीह खटखटाई। लड़कों ने किताबें खोलीं और झूमने लगे। होंठ हिलते दिखें, बस!



०२

## झपकी

चिलम एक लड़के ने भरी, हुक्का दूसरे ने ताज़ा किया। मौलवी साहब की आँख लगी। हुक्का टेढ़ा हुआ…



०३

## बेक़सूर शागिर्द

धड़ाम! किताबों पर चिनगारियाँ गिरीं। हुक्का मौलवी साहब ने गिराया था। चपत पड़ी लड़कों को।

विस्तृत कथा / पहला पन्ना

# खटिया पर उस्ताद, ज़मीन पर हुक्का

मकतब में घुसे तो आज़ाद को पहले कानों से ख़बर हुई कि पढ़ाई हो रही है। इतना शोर था जैसे मंडी लगी हो। फिर नज़र खटिया पर पड़ी। मौलवी साहब उकड़ूँ बैठे थे। सिर पर चौकोनी टोपी, पेट पर लहराती हुई रंगी दाढ़ी और हाथ में खटखटाते हुए तसबीह के दाने। उन्होंने बस ज़रा आँख तरेरी। मंडी के सारे सौदागर देखते-देखते शागिर्द हो गए। किताबें खुलीं, सिर झूमे और एक शेर रटा जाने लगा। मतलब कोई पूछ ले तो मुश्किल पड़े, मगर होंठ चलते हुए ज़रूर दिखने चाहिए।

एक लड़के ने चिलम भरी, दूसरे ने हुक्का ताज़ा किया। मौलवी साहब ने अफ़ीम घोली। एक महाजन के लड़के ने बरफ़ी मँगवाई, वह भी चखी। अब गरदन झुकी, हुक्का टेढ़ा हुआ और देखते ही देखते फ़र्श पर उसके टुकड़े थे। दो-एक लड़कों की किताबों पर चिनगारियाँ गिरीं। आँख खुली तो किसी के सिर पर धप पड़ी, किसी के कान ऐंठे गए। फिर एक लड़का फ़ारसी का शेर पढ़ने आया। शेर में एक चिट्ठी खुलने से किसी का दिल ऐसा खुलता था मानो ख़ुशी के बाग़ की कुंजी मिल गई हो। उस्ताद ने ऐसा उलटा-सीधा तर्जुमा किया कि बेचारे शागिर्द के लिए बाग़ का दरवाज़ा बंद ही रहा।

स्रोत पंक्तियाँ २४२३–२४५९, २४८४–२५५६, २५८२–२५९९, २७३९–२७९६

विस्तृत कथा / दूसरा पन्ना

# अगली शाम इम्तिहान किसका था?

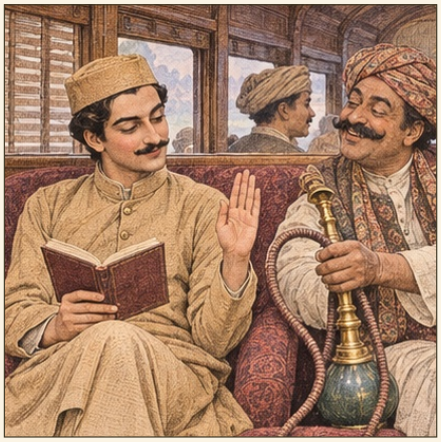
आज़ाद ने घर पहुँचकर बारह बातें लिखीं। बच्चे सुबह के धुँधलके से शाम तक क्यों बैठे रहें? दस बजे आएँ, चार बजे जाएँ। एक-एक को अलग रटाने के बजाय दर्जे बना लो। फ़ारसी भी पढ़ाओ, मगर पहले अपनी ज़बान तो समझने दो। और हाँ, हुक्का उस्ताद ख़ुद भरें। रात को मोटी लिखावट वाला वह काग़ज़ मकतब के दरवाज़े पर मिला और उसकी नक़ल शहर में दो-चार और जगह। सुबह किसी ने उसे अदालत का सम्मन समझा, किसी ने थियेटर का इश्तिहार। इबारत खुली तो मुहल्लेवालों ने तय किया कि इस बार मौलवी साहब का इम्तिहान होगा।

शाम को दो-तीन सौ आदमी जमा हुए। आज़ाद भी पहुँचे। हिंदुस्तान का सबसे बड़ा दरिया कौन-सा है? मौलवी साहब को पहले फ़रात याद आया, फिर दजला। बारिश कैसे होती है? बड़ी आसानी से समझा गए। बादल तालाबों और कुओं में घुसकर ख़ूब पानी पीता है। फिर ऊपर जाकर मुँह खोल देता है। अनाज के हिसाब में चोरी का सवाल आया तो बोले कि चोरी-चकारी थानेदार से पूछिए। अब आज़ाद ने फ़ैसला सुननेवालों पर छोड़ दिया। उनका कहना था कि मौलवी साहब इसी दम अपना बोरिया-बिस्तर समेटें। सुबह किताबों पर चिनगारियाँ गिरने की सज़ा लड़कों ने पाई थी। शाम को अपनी पढ़ाई का हिसाब उस्ताद को देना पड़ा।

### मकतब

बच्चों के पढ़ने की जगह। तसबीह गिनने के लिए दानों की माला होती है।

# आमपुर या ख़रबूजानगर?



०१

## डिब्बे में पेचवान

आज़ाद नाविल पढ़ रहे थे। पीछे से हुक्के का न्योता आया। उन्होंने पूछा, रेल में आग लग गई तो?



०२

## क्या नाम दें?

स्टेशन पर आम और ख़रबूज़ों की टोकरियाँ ही टोकरियाँ थीं। आज़ाद बोले, “आमपुर है या ख़रबूजानगर!”



०३

## आमों की गिनती

एक मुसाफ़िर दाढ़ी के हिसाब से आम गिनते थे। मतलब? खाते-खाते गुठलियों और छिलकों का ढेर दाढ़ी तक पहुँच जाए!

विस्तृत कथा / पहला पन्ना

# आम गिनने का एक निराला हिसाब

रेल के डिब्बे में आज़ाद नाविल पढ़ रहे थे। पीछे से एक साहब ने अपना पेचवान पेश किया। दो दम लगा लीजिए, मगर दो से ज़्यादा की सनद नहीं। आज़ाद ने किताब से सिर उठाया। रेल में पहले ही इतने मुसाफ़िर, ऊपर से हुज़ूर लंबी नली का हुक्का गुड़गुड़ा रहे हैं। कहीं आग लग जाए तो? साहब बोले, और रेल ही टकरा जाए तो? आसमान फट पड़े तो? इस “तो” का कौन जवाब दे! आज़ाद को तंबाकू का शौक़ नहीं था। किताब फिर खुल गई।

अगले स्टेशन पर आम और ख़रबूज़े इस कसरत से रखे थे कि टोकरियाँ ख़त्म होने में न आती थीं। आज़ाद ने पूछा, यह स्टेशन है या आम की दुकान? आमपुर है या ख़रबूजानगर? एक मुसाफ़िर ने टोका कि फ़सल को नज़र न लगाइए। फिर वह अपने शौक़ के ऐसे फ़ायदे गिनाने बैठे कि बरतन बिक जाएँ, चूल्हे पर तवा न रहे, मगर ख़रबूज़े पर छुरी ज़रूर चले। आमों का हिसाब तो उनसे निराला सुना। एक बैठक में दो दाढ़ी, चार दाढ़ी आम खा जाते थे। आज़ाद से रहा न गया। यह दाढ़ी भर आम कैसे खाते हैं? खाते जाइए जब तक छिलकों और गुठलियों का ढेर दाढ़ी तक न पहुँच जाए!

विस्तृत कथा / दूसरा पन्ना

# दो रुपये का टिकट कहाँ गया?

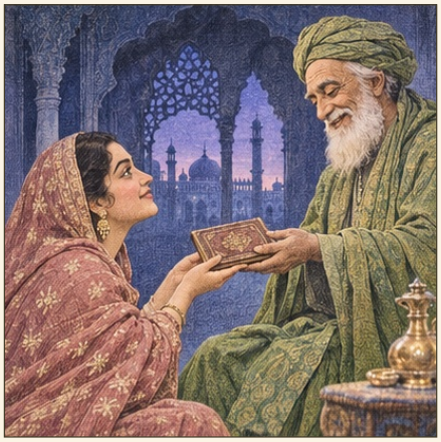
इतने में चपरासी किसी का नाम पूछता हुआ आया। अभी जिन साहब की बात दाढ़ी तक जा पहुँची थी, उन्होंने चादर से मुँह छिपा लिया और दूसरी खिड़की में झाँकने लगे। आज़ाद ने चपरासी को आगे जाने दिया, फिर मुसाफ़िर से राज़ पूछा। पहले तो जनाब अकड़े। आख़िर किसी का क़र्ज़ खाया है क्या? आज़ाद ने कहा, चपरासी को बुला लूँ? अब भेद खुला। आम और ख़रबूज़े खाए, पैसा पास था नहीं। पहले उधार लिया, फिर अपने दोस्त के मकान का अपने नाम से सौदा कर डाला। नालिश हो गई थी, उसी से भागे जा रहे थे।

अब एक दूसरे मुसाफ़िर आज़ाद के पास आ धमके। इन्हें एक रुपया चाहिए था। घर से दो रुपये लेकर चले थे। रास्ते में लँगड़े आम दिख गए। दोनों रुपये आमों को मिले, टिकट को एक कौड़ी न मिली। अभी कोई तरकीब सूझे कि काली टोपीवाले टिकट-बाबू सामने थे। आज़ाद अपना टिकट देकर निकल गए। बाबू ने इनसे टिकट माँगा तो बोले कि इस साल उन पर कोई टिकस-विकस नहीं बँधा। टिकट को टैक्स बनाने से भला कहाँ बात बनती! बाबू ने सिपाही बुलाया और साहब को हवालात भिजवा दिया। पहले मुसाफ़िर की मिठास दोस्त के मकान पर भारी पड़ी थी। दूसरे की अपनी आज़ादी पर।

### पेचवान

लंबी लचीली नली वाला हुक्का। नाविल उस दौर की बोलचाल में उपन्यास को कहते थे।

# एक ख़त, दो बहनें



०१

## सपने में एक किताब

हरे कपड़ों में एक बुज़ुर्ग ने हुस्नआरा को किताब दी। उसमें तूफ़ान से बेख़ौफ़ रहने का शेर निकला।



०२

## कौन पढ़ेगा?

सुबह आज़ाद का ख़त आया। दोनों बहनें उसे पहले पढ़ना चाहती थीं। आख़िर सिपहआरा ने पढ़ सुनाया।



०३

## एक टोकरी, दो हाथ

पाँच रुपये की पंचमेल मिठाई आई। दोनों बहनें उसे लेने लपकीं। टोकरी हुस्नआरा को मिली।

विस्तृत कथा / पहला पन्ना

# दो घंटे और हिंदुस्तान में

रात को हुस्नआरा ने ख़्वाब में एक बुज़ुर्ग को देखा। हरे कपड़े पहने पास आकर खड़े हुए और एक किताब थमाई कि इसमें फ़ाल देखो। किताब खोली तो तूफ़ान और बला से बेख़ौफ़ रहने का शेर सामने था। आँख खुली। न बुज़ुर्ग का पता था, न किताब का। हुस्नआरा पढ़ी-लिखी थीं। किताब में उँगली धर देने से किसी को आगे की ख़बर कैसे मिल सकती थी? फिर भी उस सुबह उनका दिल कुछ हल्का था। जिस आदमी को उन्होंने ख़ुद रूम की तरफ़ से लड़ने को भेजा हो, उसके सिर पर तूफ़ान का नाम भी आए तो शेर याद रह ही जाता है।

छोटी बहन सिपहआरा को अभी ख़्वाब सुना ही रही थीं कि आज़ाद की चिट्ठी आ गई। बड़ी ने कहा, मैं पढ़ूँगी। छोटी ने कहा, हम पढ़ेंगे। प्यार से झिड़की दी, बड़ी बहन होने का वास्ता भी दिया। चिट्ठी सिपहआरा के हाथ रही और उन्होंने दोनों के लिए ज़ोर से पढ़ी। आज़ाद को जहाज़ पर सवार होना था। बस दो घंटे और हिंदुस्तान में, उसके बाद “सफ़र, सफ़र, सफ़र।” वह ख़ुश थे, मगर जानना चाहते थे कि हुस्नआरा का जी कैसा है। जाते-जाते सिपहआरा के नर्म दिल का ख़याल रखने को भी लिख गए थे।

स्रोत पंक्तियाँ ७४२८–७४५६, १२४९८–१२५८५

विस्तृत कथा / दूसरा पन्ना

# दादी के हिस्से की मिठाई

ख़त में खोजी की भी ख़बर थी। पानी को देखकर जी मचल रहा था और हुज़ूर समुंदर पार करने चले थे। बहनों ने ज़रा उस बेचारे की ख़बर ली, फिर सिपहआरा को फ़ाल याद आई। देखा, हम कहती थीं कि ख़बर आएगी! अब मिठाई चाहिए। पाँच रुपये की पंचमेल मिठाई मँगवा ली। बड़ी बहन को इनाम में एक डली मिलेगी। हुस्नआरा कहने लगीं कि आने तो दो, आधी न चख जाएँ तो कहना। फ़ाल पर उनकी राय अब भी वही थी। लोग आँखें बंद करके किताब खोलते हैं और जो जी में आता है मतलब निकाल लेते हैं।

बाहर से पुकार आई। दोनों बहनें लपकीं। मामा के हाथ में एक चंगेली, उसके आगे दो गाहक। टोकरी हुस्नआरा को मिली। बरफ़ी पर चाँदी का वर्क देखो कैसा चमक रहा है! सिपहआरा को पहले अपने पाँच रुपये याद आए, फिर उन्होंने सबको मिठाई बाँटी। कुछ डलियाँ दादी के पास पहुँचीं तो उन्होंने पूछ लिया कि ख़ुशी किस बात की है। मामा फ़ाल से चिट्ठी पर और चिट्ठी से जुदाई पर जा पहुँचीं। दादी छड़ी टेकती हुईं सीधे बहनों के पास। सिपहआरा ने झट बता दिया कि दीवान-ए-हाफ़िज़ में चार सौ सफ़े हैं या चार सौ चालीस, इसी पर शर्त थी। दादी को तसल्ली हो गई। आज़ाद का ख़त दोनों बहनों के बीच ही रहा।

### फ़ाल

यहाँ किसी किताब का पन्ना खोलकर उसमें अपने भविष्य का संकेत तलाशना। दीवान-ए-हाफ़िज़ फ़ारसी शायर हाफ़िज़ की कविताओं का संग्रह है।

स्रोत पंक्तियाँ ७४२८–७४५६, १२४९८–१२५८५

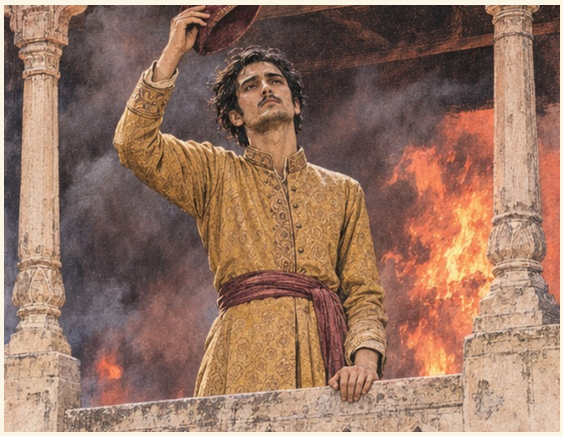
# छत से आख़िरी सलाम



१ रात के ग्यारह बजे। चाँदनी देख रही चारों बहनों ने शोर सुना। सामने हुमायूँ फ़र की कोठी में आग लगी थी।



२ शाहज़ादा छत पर घिरा था। नीचे लोग दरिया से घड़े भरकर लाए। हवा तेज़ थी और शोले चढ़ते गए।



३ जब आग एक गज़ पर रह गई, हुमायूँ फ़र ने सिपहआरा को सलाम किया और कूद पड़े। सिपहआरा भी खिड़की से कूदीं।



४ गीली घास ने शाहज़ादे की जान बचाई। सिपहआरा उठ खड़ी हुईं। उन्हें शाहज़ादे को अपनी आँखों से देखना था।

विस्तृत कथा / पहला पन्ना

# महताबी पर कौन है?

रात के ग्यारह बजे घर की औरतें छत पर चाँदनी का मज़ा ले रही थीं। मामा ने उन्हें चुप कराकर कहा कि सुनिए तो, यह शोर कैसा है। हुस्नआरा को पास ही लपट दिखाई दी। नवाब साहब की पुकार आई कि पड़ोस में आग लगी है, काम का सामान निकालो। कपड़े पड़े रहने दो, पहले जेवर और जवाहिरात अलग कर लो। सब नीचे उतरीं और सामान बाहर रखकर फिर छत पर पहुँचीं। अब हुमायूँ फ़र की कोठी चारों ओर से जल रही थी। छत की मोटी बल्लियाँ ऐसे चटक रही थीं जैसे बादल सिर पर गरजा हो।

सिपहआरा को भीड़ से ऊपर कुछ दिखा। बहन, ज़रा इधर आओ। महताबी पर कौन है? महताबी, यानी खुली हवा में बैठने के लिए बनाई गई छत। हुस्नआरा ने पहचान लिया। ख़ुद शाहज़ादे खड़े थे। वह इस उम्मीद में ऊपर आए थे कि शायद सिपहआरा की एक झलक मिल जाए। ठंडी हवा लगी तो आँख लग गई। जब तक शोर से जागे, नीचे का हिस्सा चारों तरफ़ से आग पकड़ चुका था। अब देखने को वह सामने थीं, मगर बीच में इतना धुआँ और ऐसी लपट थी कि दोनों छतों की थोड़ी-सी दूरी भी पार करना मुश्किल था।

विस्तृत कथा / दूसरा पन्ना

# सिर पर हाथ रखकर कहो

नीचे मिस्त्री और मज़दूर दरिया से लाए घड़ों का पानी उँडेल रहे थे। हवा लपटें और ऊँची कर देती थी। शाहज़ादे ने छोटे भाई को पुकारकर घर-बार सौंपा। अम्माँ को तसल्ली देना कि हुमायूँ फ़र न रहा तो मैं तो हूँ। फिर सिपहआरा को दूर से सलाम किया। उन्हें खिड़की पर सिर पीटते देखकर हाथ बाँध दिए। वह ऐसा करेंगी तो वह अपनी जान दे देंगे! कहने को यह बात उस आदमी ने कही जिसके पैरों तले जलती हुई छत थी। एक गज़ का फ़ासला बचा। उन्होंने टोपी उतारकर आख़िरी सलाम किया और कूद गए। उसी पल सिपहआरा भी अपनी खिड़की से नीचे कूद पड़ीं।

शाहज़ादा गीली, नरम घास पर गिरा और बेहोश हो गया। सिपहआरा को चोट नहीं आई। उठते ही उन्होंने शाहज़ादे को दिखाने की ज़िद की। नवाब साहब ने कहा, भीड़ छँटने दो। उन्हें इतना काफ़ी न लगा। उनके सिर पर हाथ रखकर वादा करना पड़ा। उधर डॉक्टर ज़ख़्मी टाँग की पट्टी बाँध रहा था। रात दर्द में कटी। सुबह नवाब साहब ने शाहज़ादे को एक ख़त पढ़कर सुनाया। शहसवार ने लिखा था कि तुमने मेरा दिल जलाया तो मैं तुम्हारा घर क्यों न जलाता? इस वक़्त तक ख़त लिखनेवाला रात भर घोड़ा दौड़ाकर एक गाँव पहुँच चुका था। उसे हर घड़ी पीछे से पुलिस आ जाने का डर था।

### महताबी

छत पर खुली बैठक जहाँ रात की हवा और चाँदनी में बैठा जा सके।

# खोजी की बारात

मीडा के घर जाते हुए खोजी को अपने टट्टू से ही जूझना पड़ा।



०१ गेरुआ जोड़ा, सियाह पगड़ी। खोजी अकड़कर टट्टू पर बैठे। आगे निशान का खच्चर था, चारों ओर मशालें।



०२ दो क़दम आगे, चार पीछे। फिर टट्टू वहीं बैठ गया। लड़के हँसे तो खोजी गरजे, “जल्द कोई तदबीर बताओ!”



०३ साईस ने टट्टू को उठाया। खोजी ने एक पाँव रकाब में रखा ही था कि टट्टू चल पड़ा। खोजी गिरे। पगड़ी, करौली और डिबिया बिखर गईं।



०४ साईस ने कहा कि घोड़े से गिरना शहसवारों का काम है। खोजी बोले, “ख़ैर हुई कि मैं घोड़े पर न गिरा। मेरा बोझ पड़ता तो उसका काम तमाम था!”

आज़ाद-कथा, पंक्तियाँ १७११८–१७१४१। प्रसंग और संवाद का संक्षिप्त रूपांतर।

विस्तृत कथा / पहला पन्ना

# टट्टू की अपनी मर्ज़ी

उस दिन शहर की छतों से फूल बरस रहे थे। फ़ौज मोर्चे को जा रही थी। किसी का बेटा जा रहा था, किसी का शौहर। मियाँ आज़ाद भी घोड़े पर सवार निकल गए। उनके दोस्त खोजी के पास अब करने को क्या था? वह मिस मीडा के यहाँ जा बैठे। मीडा ने देखते ही ख़ुशख़बरी दी कि अपनी सहेली मिस रोज़ से आपका ब्याह तय कर दिया है। कल बारात ले आइएगा।

खोजी को दुलहन की मंज़ूरी पूछने का ख़याल तक न आया। उन्हें फ़िक्र हुई कि तबले पर थाप कौन देगा। नाच का इंतज़ाम कैसे होगा? मीडा ने सुझाया कि तीन बंदर नचानेवाले बुला लीजिए। तीन का अंक तो मनहूस ठहरा। दूल्हे मियाँ को पाँच चाहिए थे! दूसरे दिन आगे निशान लिए खच्चर था, पीछे बंदर, चारों ओर मशालें उठाए लड़के। बीच में गेरुआ जोड़ा और सियाह पगड़ी पहने खोजी टट्टू पर अकड़े बैठे थे।

टट्टू ने दो क़दम आगे रखे, चार पीछे, फिर बैठ गया। साईस ने खोजी को उतरवाकर उसे खड़ा किया। अब एक पाँव रकाब में था, दूसरा हवा में, और टट्टू को ठीक इसी वक़्त चलना सूझा। खोजी धम्म से गिरे। पगड़ी कहीं, करौली कहीं, अफ़ीम की डिबिया कहीं।

विस्तृत कथा / दूसरा पन्ना

# कोहक़ाफ़ की परी का पता

साईस ने गिरने में भी शहसवारी की दाद दी। जिसे घोड़ा ही नसीब न हो, वह भला गिरेगा कैसे! खोजी उठे। शुक्र कीजिए कि वह घोड़े पर नहीं गिरे, वरना उनके बोझ से बेचारे का काम ही तमाम हो जाता। पगड़ी सँभाली, करौली खोंसी। पोशाक कैसी लग रही है? आईना न मिला तो एक लड़का हाँड़ी में पानी ले आया। मुँह देखने को हाँड़ी उठाई और सारा पानी अपने ऊपर उँडेल लिया।

बारात फिर चली। दो क़दम बाद खोजी ने जुलूस रुकवा दिया। किसी को मिस रोज़ के घर का पता भी मालूम है? साईस ने कहा, नाम बता दीजिए, पूछ लें। दूल्हा अपनी दुलहन का नाम ज़बान पर कैसे लाए! खोजी ने हुक्म दिया कि कोहक़ाफ़ की परी का पता पूछो। एक आदमी को याद आया कि पिछले साल शहर के पूरब एक तालाब पर कोई फ़क़ीर ठहरा था। उसके पास एक परी थी। बस, टट्टू उसी तरफ़ मोड़ दिया गया।

तालाब वाली कोठी में रईस की बीवी गुज़री थीं। अंदर मातम था, बाहर खोजी को शिकायत कि बारात आ गई और दरवाज़े पर रोशनी तक नहीं! नौकर डंडे लेकर निकले। पगड़ी फिर गिरी। बंदरवाले भागे, लड़कों ने मशालें फेंकीं, टट्टू ने अपनी राह ली। पिटे-पिटाए खोजी अकेले होटल लौटे।

### करौली

कमर में रखी जाने वाली छोटी कटार। खोजी बात-बात पर उसे निकालने की धमकी देते हैं।

दरख़्त पर खोजी

# पानी माँगा, ढेले मिले



## १ पानी, भाईजान!

खोजी के हाथ में डिबिया थी। नीचे बैठे आदमी को उन्होंने उर्दू में पुकारा। जवाब फ्रांसीसी में आया।



## २ इशारे की हार

पहले पत्ते गिरे, फिर एक टहनी। नीचेवाले ने ऊपर ढेले फेंके। खोजी की शामत आ गई।



## ३ तीसरा आदमी

एक तुर्क ने समझा-बुझाकर खोजी को नीचे उतारा। पानी मिलने के बाद खोजी फिर अपनी डाल पर जा बैठे।

विस्तृत कथा / पहला पन्ना

# ऊपर उर्दू, नीचे फ़्रांसीसी

आज़ाद को पहरेदार साइबेरिया की तरफ़ ले गए थे। उनके साथी खोजी लड़ाई देखने के लिए एक पेड़ पर चढ़े बैठे थे। बैठे-बैठे अफ़ीम की डिबिया निकाल ली। मुसीबत यह थी कि उसे घोलने के लिए उस ऊँचाई पर पानी कहाँ से आए? पेड़ के नीचे एक आदमी बैठा था। झुककर बड़ी नरमी से पुकारा कि भाईजान, ज़रा पानी पिला दो।

उसने ऊपर देखा। उसकी समझ में पहले यह तो आए कि आप हैं कौन। खोजी उर्दू में बताएँ कि अफ़ीम घोलनी है, वह फ़्रांसीसी में जवाब दे। एक को हैरत कि यह आदमी पहाड़ छोड़कर यहाँ क्यों चढ़ बैठा, दूसरे को अपने हिंदुस्तान की याद कि इस मौसम में तो राह चलते केवड़े की महक वाला पानी मिल जाता है। जगह-जगह सबीलें लगती हैं। और यहाँ नीचे बैठा आदमी दो घूँट के लिए हिलने को तैयार नहीं!

नीचेवाले को चिंता थी कि कहीं ऊपर से गिर न पड़ें। ऊपरवाले ने इशारा किया। उससे भी काम न बना तो पत्ते तोड़-तोड़कर फेंके। फिर एक टहनी भी नीचे आई। जवाब में ऊपर ढेले पहुँचे। पानी के मुकाबले उनकी ज़बान समझने में खोजी को ज़रा देर न लगी।

विस्तृत कथा / दूसरा पन्ना

# ज़रा अदब कम कीजिए

इतने में एक तुर्क उधर आ निकला। उसने खोजी को समझाकर नीचे उतारा। पानी मिला, अफ़ीम घुली, चुस्की ली गई। अब जहाँ इतनी दुर्गत हुई थी, समझदार आदमी उस पेड़ को दूर से सलाम करता। खोजी फिर ऊपर गए और इस बार मोटी डाल से पीठ लगाकर ऊँघने लगे।

नीचे तब तक मैदान का रंग बदल गया था। गोलाबारी में तुर्की सरदार गिर पड़ा, उसकी फ़ौज पीछे हटी और एक रूसी पलटन ने वहीं पड़ाव डाल दिया। एक जवान ने खोजी को देख लिया और नीचे उतरने की पुकार लगाई। फिर कहीं ढेले न पड़ें! खोजी उतर आए। उनके पाँव अभी ठीक से ज़मीन पर पड़े भी न थे कि एक रूसी ने उन्हें उठाकर पटक दिया। फिर उन्हें बंदी तुर्क सिपाहियों के पास बिठा दिया गया।

एक बंदी ने पहचान लिया। आप तो आज़ाद के साथ थे, उनके क्या लगते हैं? खोजी ने बड़ी शान से ख़ुद को आज़ाद का बाप बता दिया। लड़ना भी तो उन्होंने ही सिखाया था! तुर्कों ने बाक़ायदा फ़ौजी सलाम किया। खोजी रोए, बेटे की सूरत दिखाने को कहा, फिर यकायक अपनी इज़्ज़त से घबरा उठे। भाई, सलाम ज़रा कम करो! कहीं रूसियों को सचमुच ख़बर लग गई कि यह आज़ाद पाशा के बाप हैं तो जान और आफ़त में पड़ेगी।

### सबील

राहगीरों के लिए पानी पिलाने का इंतज़ाम। खोजी को परदेस में अपने वतन की सबीलें याद आती हैं।

शाहज़ादे की पहचान

# लिखावट तो वही है!



## १ दो अख़बार, दो राय

एक ने घरवालों की पहचान को काफ़ी समझा। दूसरे ने जाँच की माँग की। आख़िर यह शाहज़ादा है कौन?



## २ ख़त की गवाही

कलक्टर ने नया रुक़्क़ा और अपना पुराना ख़त मिलाया। वही लिखावट! उन्हें लगा कि पहचान हो गई।



## ३ एक पुराना सवाल

कलक्टर ने अपनी दी हुई एक चीज़ याद दिलाई। शाहज़ादा कुछ बता न सके। कई सवालों के बाद कलक्टर की राय पलट गई।

विस्तृत कथा / पहला पन्ना

# एक सवार और दो अख़बार

जिस घर में कल तक शाहज़ादे हुमायूँ फ़र के ब्याह की बधाई गाई जा रही थी, आज वहाँ रोने की आवाज़ें थीं। दरिया में आँधी आई थी। मल्लाह ने किश्ती बचाने की जितनी बन पड़ी कोशिश की, मगर वह चक्कर खाकर डूब गई। बहन अपने मेहँदी लगे हाथों से छाती पीट रही थी। उधर बड़ी बेगम की पहली फ़िक्र थी कि सिपहआरा के कान में अचानक यह ख़बर न पड़ जाए। उन्हीं से शाहज़ादे का ब्याह होने वाला था।

फिर वह दिन भी आया जब सिपहआरा उनकी क़ब्र पर फूल चढ़ाने जाने लगीं। किसी फ़क़ीर ने उनकी उस्तानी से कहा था कि जुमेरात को शाहज़ादा जी उठेगा। क़िले के फाटक पर शाह साहब के कहने से सिपहआरा घोड़े पर चढ़ीं। क़ब्र के पास जाकर पूछा कि घर चलोगे या हमें भी यहीं सुलाओगे। ऐसी रोशनी हुई कि सबकी आँखें झपक गईं। सामने एक घुड़सवार था। हुस्नआरा ने शाहज़ादे की बहन ख़ुरशेद से पूछा कि अच्छी तरह देख लो, क्या यही हैं? ख़ुरशेद को अपने भाई की सूरत में कोई शक न था।

ख़बर अख़बारों में पहुँची। एक ने पूछा, जब माँ और बहनें पहचान रही हैं तो किसकी गवाही चाहिए? दूसरे ने क़ब्र और जायदाद, दोनों की तरफ़ उँगली उठाई। कहीं बेगम की मिल्कियत हथियाने को कोई आदमी बेटा बनकर तो नहीं आ बैठा?

स्रोत पंक्तियाँ २१४९७–२१५२०, २५३८३–२५४०७, २५५७४–२५६०५, २५७८६–२५८४३, ३३१११–३३१२४

विस्तृत कथा / दूसरा पन्ना

# जेब में पुराना ख़त

कलक्टर और पुलिस के कप्तान ने तय किया कि औरों की ज़बानी बहुत सुन लिया, अब आदमी को ख़ुद देखें। दोनों घोड़े दौड़ाकर पहुँचे। शाहज़ादे के भाई ने हाथ मिलाया, इज़्ज़त से बिठाया। भीतर से कहलाया गया कि शाह साहब की इजाज़त के बग़ैर हुमायूँ फ़र बाहर नहीं आ सकते। हाँ, साहब कुछ पूछना चाहें तो लिख भेजें।

जवाब में एक रुक़्क़ा आया। कलक्टर की जेब में असली शाहज़ादे का एक पुराना ख़त था। दोनों काग़ज़ साथ रखकर देखे। लिखावट तो वही है! अब उन्हें भी यक़ीन आया। मगर एक बात फिर खटकी। अगर यही शाहज़ादे हैं तो फ़क़ीर इन्हें मिलने क्यों नहीं देता? छोटे भाई को हँसी आई। जब किसी के कहे का यक़ीन ही नहीं तो ख़ुद चलकर देख लीजिए।

आख़िर वह आदमी एक कमरे में बैठा, अधिकारी बरामदे में। कलक्टर ने एक ऐसी चीज़ याद दिलाई जो कभी उन्होंने शाहज़ादे को दी थी। क्या वह मिली थी? सामनेवाले को याद न आया। और सवाल हुए, जवाब कोई न मिला। लिखावट से जिन साहब का शक दूर हुआ था, वही अब उसे दूसरा आदमी मानकर उठे। ख़ुरशेद की पहचान और साहब की राय अपनी-अपनी जगह रह गईं। इतना आगे चलकर आज़ाद ख़ुद बताते हैं कि सिपहआरा का निकाह हुमायूँ फ़र के छोटे भाई से हुआ।

### रुक़्क़ा

छोटी चिट्ठी। यहाँ उसकी लिखावट को पहचान की गवाही समझा जाता है।

स्रोत पंक्तियाँ २१४९७–२१५२०, २५३८३–२५४०७, २५५७४–२५६०५, २५७८६–२५८४३, ३३१११–३३१२४

# जहाज़ पर ख़ोजी की तान

मल्लाह की चेतावनी सुनकर ख़ोजी को सबसे पहले शिताबजान की याद आई।



०१ मल्लाह ने तूफ़ान की ख़बर दी। ख़ोजी की दुहाई छूट गई। उन्होंने शिताबजान को पुकारा कि उनके लिए दुआ माँगे।



०२ आँधी आई तो ख़ोजी ने अफ़ीम की डिबिया कसकर कमर से बाँध ली। अब तूफ़ान आ जाए, उन्हें क्या ग़म!



०३ जहाज़वालों को फ़िक्र थी कि तूफ़ान क्या गुल खिलाएगा। उधर ख़ोजी शिताबजान की याद में तान लगा रहे थे।



०४ ठाकुर साहब ने समझा, ये तो कोई बड़े वली हैं। अपनी टोपी उनके क़दमों पर रखकर अपने लिए दुआ माँगी।

आज़ाद-कथा, पंक्तियाँ २६७०–२६७०६। प्रसंग का संक्षिप्त रूपांतर।

विस्तृत कथा / पहला पन्ना

# पहले डिबिया बचा लें

बम्बई की राह पर जहाज़ अभी थोड़ी ही दूर गया था। खोजी अपनी प्यारी शिताबजान की याद में तुक बाँध रहे थे और आज़ाद उनकी वाह-वाह करके उन्हें और चढ़ा रहे थे। इतने में एक मल्लाह ने पुकारा कि सब लोग होशियार हो जाएँ, तूफ़ान आने वाला है। लोगों के चेहरे बदल गए। खोजी के मुँह से जहाज़, बेड़े और समुंदर, तीनों की दुहाई निकली। फिर शिताबजान को पुकारा कि प्यारी शिताब, दुआ माँग!

इतने में भी एक नज़र आज़ाद पर डाल ली। अपने फ़िकरे की दाद चाहते थे। आज़ाद ने दी भी। शिताबजान के लिए शिताब, क्या खूब। खोजी ने मुसाफ़िरों को समझाया कि सब रो-रोकर उनके बच निकलने और शिताबजान से उनके ब्याह की दुआ माँगें। आज़ाद को याद दिलाना पड़ा कि जहाज़ पर कुछ और लोग भी तो हैं।

आँधी आ गई। आज़ाद कप्तान के पास चले गए। खोजी ने अपनी सबसे अज़ीज़ चीज़ बचाने की तदबीर की। अफ़ीम की डिबिया निकाली, कसकर कमर से बाँध ली। अब तूफ़ान क्या, तूफ़ान का बाप आ जाए! थोड़ी देर पहले जो सबको रोने का हुक्म दे रहे थे, अब उन्हीं की तान उठी। जहाज़वाले आँधी की फ़िक्र में थे और खोजी के सुर में अब भी शिताबजान ही थीं।

स्रोत पंक्तियाँ २६६६४–२६७७२

विस्तृत कथा / दूसरा पन्ना

# नसीहतें लिखने की कॉपी

जहाज़ पर एक ठाकुर साहब भी थे। इस घड़ी किसी को बेफ़िक्र गाते देखा तो समझे कि बड़े पहुँचे हुए वली हैं। टोपी उतारकर खोजी के क़दमों पर रख दी। अपने हक़ में दुआ माँगी। खोजी ने बेड़ा पार होने की ख़ुशख़बरी सुना दी। आज़ाद ने दोस्त के कान में कह दिया कि शागिर्द अच्छा हाथ आया है, अब रास्ता मज़े से कटेगा।

ठाकुर साहब ने पूछा, जुमे का सफ़र कैसा? बहुत अच्छा। और जुमेरात? उससे भी अच्छा। आज़ाद ने पूछा कि कितने बरस से सफ़र करते हैं। कोई चालीस बरस से। तब भी अच्छे-बुरे दिन पूछते हैं! ठाकुर साहब ने उलटे आज़ाद को सनीचर को निकलकर देखने की चुनौती दे डाली। खोजी की नसीहतें अभी बाक़ी थीं। मौसम चाहे जैसा हो, रात को दो घंटे ठंडे पानी में खड़े होकर ख़ुदा को याद करें। खाने को जौ की रोटी बहुत है। ठाकुर साहब अपनी कॉपी में सब उतारते गए।

फिर मुलाक़ात कहाँ हो? खोजी ने लखनऊ में शिताबजान का मकान पूछने को कहा। ठाकुर साहब इतना भर पूछ बैठे कि वह हैं कौन। बस, इतनी जान-पहचान काफ़ी थी! सामने बम्बई दिखाई दी और खोजी किनारे पर अपनी महबूबा की सवारी ढूँढ़ने लगे। किसी ने कहा, इतनी दूर से कैसे सुनेंगी? खोजी को यक़ीन था, इश्क़ के कान दो कोस तक सुनते हैं।

### वली

ईश्वर के निकट माना जाने वाला संत। ठाकुर साहब खोजी के गाने का अपना ही मतलब निकाल लेते हैं।

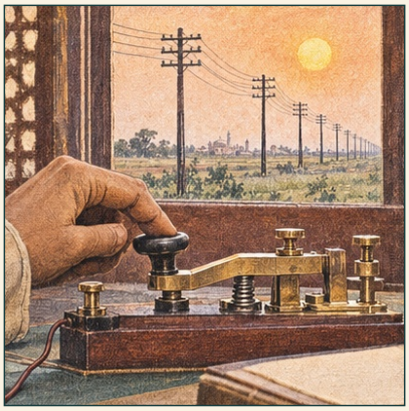
उपसंहार

# मीडा और बंद ख़त



## १ बम्बई से वापसी

मीडा की बातों पर आज़ाद को यक़ीन नहीं था। बिना ज़रिये के कोई दूर बैठे आदमी तक बात कैसे पहुँचाएगा?



## २ तार की खटखट

मीडा ने मिसाल दी। जिसे तार का काम न मालूम हो, उसे भी तो दूर तक ख़बर पहुँचाना जादू लगेगा।



## ३ दरवाज़े से आया कार्ड

बंद ख़त पढ़ने की बहस चल ही रही थी कि बैरा कार्ड ले आया। मीडा भी मेहमान से मिलना चाहती थीं। आज़ाद उन्हें बुलाने चल दिए।

विस्तृत कथा / पहला पन्ना

# दो पुराने दोस्त, एक नई बहस

हुस्नआरा और आज़ाद का निकाह हो गया था। किस्सागो अब क़लम रख ही रहे थे कि उन्हें ख़याल आया, पाठक पूछेंगे कि अच्छे, फिर खोजी कहाँ गए? मियाँ आख़िर दम तक आज़ाद के दोस्त रहे। अफ़ीम की डिबिया साथ रही और अपनी करौली का ख़याल भी उन्हें कभी न भूला। मगर दो हमसफ़र और थीं जिनका हाल जानना बनता था।

मीडा और क्लारिसा, जो आज़ाद के साथ समुंदर पार करके आई थीं, दोनों ने हिंदी और उर्दू पढ़ी। दोनों ने औरतों की सेवा को अपनी ज़िंदगी का काम बनाया और थियॉसफ़ी नाम की एक आध्यात्मिक विचारधारा अपनाई। क्लारिसा कलकत्ते की ओर चली गईं। बम्बई से लौटकर मीडा आज़ाद से मिलने आईं। आज़ाद ने छेड़ा कि अब तो आप थियॉसफ़िस्ट हो गईं। मीडा ने बड़े यक़ीन से कहा कि यह राह उन्हें ख़ुदा ने दिखाई है।

बस फिर क्या था! आज़ाद ने इस विचार को मानने वाले आलिमों के नाम पूछे। मीडा को अफ़सोस हुआ कि दुनिया भर में जिन लोगों की चर्चा है, उनके दोस्त को उनकी ख़बर ही नहीं। उधर आज़ाद को रूहों से बात करने में मदारी का खेल दिखाई देता था। वैज्ञानिकों के नाम लेकर मीडा ने पूछा कि तब न्यूटन और हर्शल के काम को भी यही कहोगे?

विस्तृत कथा / दूसरा पन्ना

# खटखट की ज़बान

आज़ाद ने एक सुनी हुई बात पेश की। कहते हैं, एक साहब चिट्ठी लिखकर मेज़ पर रखते हैं और बिना डाक के वह जिसे भेजी है उसके पास पहुँच जाती है। मीडा ने पूछा, लिखना न जानने वाला किसी को एक काग़ज़ पर लकीरें खींचते और दूसरे को वही देखकर उसकी बात समझते देखे तो उसे कैसा लगेगा? और जिसे तार का भेद मालूम न हो, वह क्यों मानेगा कि ज़रा-सी खटखट से हज़ारों मील दूर ख़बर पहुँच गई?

दोनों ने एक-दूसरे के सीधे रास्ते पर आने की दुआ भी कर डाली। आज़ाद बार-बार इसे मज़हब कहें और मीडा खीझें कि कितनी बार समझाऊँ! अब बात एक बंद ख़त पर आई। आज़ाद ने सुना था कि मैडम ब्लैवट्स्की लिफ़ाफ़ा खोले बग़ैर पढ़ लेती हैं। मीडा का दावा था कि अपनी आँखों से ऐसा करते देखा है। वह ख़ुद भी एक दिन करके दिखाएँगी। आज़ाद उस दिन के जल्द आने की दुआ करने लगे।

अभी इस ख़त का फ़ैसला बाक़ी था कि बैरा एक कार्ड ले आया। उसे पहचानने के लिए आज़ाद को कोई करामात न करनी पड़ी। मेहमान हुमायूँ फ़र के छोटे भाई थे, जिनसे सिपहआरा का ब्याह हुआ था। यानी आपके साढ़ू, मीडा ने कहा। वह भी उनसे मिलेंगी। आज़ाद उन्हें बुलाने दीवानख़ाने की ओर चले गए।

### तार

यहाँ तार से मुराद टेलीग्राफ़ है, जिससे संकेत भेजकर दूर समाचार पहुँचाया जाता था।

संग्रहालय के पठन-संदर्भ

# जिन पन्नों से इतिहास मिला

१ जेनिफ़र डब्रो

Cosmopolitan Dreams (2018), chapters 1, 2 and 4

अख़बार की नौकरी, ज़राफ़त स्तंभ और पाठकों के पत्र। धौलपुर की चिट्ठी के लिए पृ. ८२–८३, अमरावती के लिए पृ. ८५–८६ और हुस्नआरा पर पाठिका की आपत्ति के लिए पृ. ६०–६१।

२ जेनिफ़र डब्रो

Serial Fictions (2017), pp. 403·422

अख़बार में निकले पाठ और बाद की जिल्दों के अंतर, धारावाहिक के प्रकाशन का क्रम।

३ रेख़्ता / लेखक-परिचय

Ratan Nath Sarshar

लेखन, अध्यापन और ख़ुदाई फ़ौजदार सहित सरशार की दूसरी रचनाएँ। सरशार के जन्मवर्ष के अलग अनुमान मिलते हैं।

४ हाइडेलबर्ग का दक्षिण एशिया संग्रह

Naval Kishore Press Bibliography, FID4SA

१८५८ में प्रेस की स्थापना और उसकी मुद्रित विरासत की ग्रंथसूची।

संग्रहालय के पठन-संदर्भ

# जिन पन्नों से इतिहास मिला

## ५ तोयो बुन्को की संग्रह-प्रविष्टि

CiNii Books, BD13612843

पहली उर्दू जिल्द के पुनर्मुद्रण की प्रविष्टि मूल प्रकाशन को लखनऊ, १८८१ और मुंशी नवल किशोर के छापेख़ाने से जोड़ती है।

## ६ जस्टिन जोन्स

Lucknow, history from 1856

औपनिवेशिक लखनऊ की संस्थाएँ, मुशायरा, दास्तानगोई और दरबारी संस्कृति का जारी प्रभाव।

## ७ उस समय के राजनयिक पत्र

Foreign Relations of the United States, 1878

रूस और उस्मानी सल्तनत की जंग के बाद शांति-समझौते का समकालीन अभिलेख।

## ८ कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस

Remembering and Re-telling 1857

हैदर अली की चिट्ठी का विवेचन और डब्रो के अध्ययन के पृष्ठ का संदर्भ।